तृतीय अध्याय

विष्णु प्रभाकर के एकांकियों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ

तृतीय अध्याय

विषय प्रवेश -

नाटक एक सामाजिक कला है । इसमें आयोजन से लेकर अवलोकन तक की क्रियाएँ समाज द्वारा ही सम्पादित होती है । वैयक्तिक अथवा एकान्तिक साधना से नाट्य - क्षेत्र में सफलता की संभावना नहीं की जा सकती । रंग-मंच अथवा प्रेक्षागृह का निर्माण, अभिनय का नियोजन, अवसराचित वेशभूषा का अनुकरण आदि के लिए समाज की अनिवार्यत: अपेक्षित होती है । अंतत: नाटक एकांकी का प्रदर्शन समाज द्वारा 'सामाजिक' के लिये ही तो किया जाता है । दर्शक तो समाज के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता । इस प्रकार नाटक एकांकी सर्वस्व सामाजिकता से सम्पृक्त हैं ।

सामाजिक जीवन में घटित होनेवाले विभिन्न प्रकार के क्रिया - कलाप, वेश - भूषा, भाषा आदि के आधार पर ही नाटककार अपनी रचनाओं में कथानक, पात्र, रस, संवाद आदि नाटकीय तत्त्वों का समावेश करता है । अत: प्रत्येक नाटककार को सामाजिक गतिविधियों के प्रति पूर्ण सचेतन रहना पड़ता है । आधुनिक काल में नाट्य लेखन की प्रेरणा किसी-न-किसी सामाजिक समस्या से प्राप्त होती है। वैसे प्रत्येक युग में नाटक या एकांकी लिखने के पीछे तत्कालीन परिस्थिति का प्रमुख स्थान रहा है । प्रेरणा चाहे धर्म की हो या अर्थ की अथवा राजनीति की वह प्राप्त होती है -समाज से ही ।

3.1 नाटक और सामाजिक स्थिति -

प्रत्येक देश का नाट्य साहित्य अपने समाज का प्रतिरूप हुआ करता है । सामाजिक के समक्ष समाज का प्रस्तुतीकरण ही नाटक का मूल उद्देश्य होता है । सामान्य लोग समाज की जिन सूक्ष्म स्थितियों का अवलोकन नहीं कर पाते नाटक द्वारा उनका भी प्रत्यक्षीकरण हो जाता है । "नाटक मूलत: सामाजिक स्थितियों की अनुकृति है ।" [1]

सामाजिक आदर्श, नियम, जीवनमूल्य, प्रथा, रीति संस्कृति, समस्या आदि के अनुरूप ही नाटक का निर्माण हुआ करता है ।

प्रत्येक समाज के आचार विचार एवं अन्य जीवन स्तरों में अन्तर होता है, इसलिए देश-काल भेद से नाट्य एकांकियों के प्रतिपादन में भी भिन्नता आ जाती है । विभिन्न देशों के नाटकों के तुलनात्मक अध्ययन से यह बात पूर्णत: स्पष्ट हो जायेगी । नाटकों के अध्ययन - प्रदर्शन से ही तद्युगीन सामाजिक स्थितियों का स्पष्ट चित्र अंकित हो जाता है, जैसे 'भास' नाटको में अभिव्यक्त तत्कालीन समाज में प्रचलित वर्ण-जाति-भेद की अस्तव्यस्तता, कालिदास के नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम' में चित्रित गुप्त-साम्राज्य की सम्पन्नता, 'शूद्रक मृच्छ्कटिकम्' में आर्थिक विपन्नता, शेक्सपियर के 'जुलियस सीजर' में व्यंजित भूत-प्रेतादि की भावना ।

वस्तुत: नाटक " विश्व की समस्त परिस्थितियों एवं घटनाओं का अनुकरण रहता है । "[2] याने नाटक में तत्कालीन सामाजिक घटनाओं को प्रतिबिंबित किया जाता है ।

3.2 सामाजिक समस्या -

सामाजिक समस्या से तात्पर्य यह कि जीवन में आनेवाली यह समस्या जो सामाजिक नियम रूढ़ि व परंपरागत मान्यताओं के कारण उत्पन्न होती है । इन समस्याओं से पूरा समाज प्रभावित होता है । राम आहुजा के अनुसार "सामाजिक समस्या शब्द उसी विषय के लिए उपयोग किया जाता है जिसे सामाजिक आचार शास्त्र और समाज प्रतिकूल समझता है ।"[3]

तात्पर्य यह कि सामाजिक समस्या वही है जिसका समाज जीवन पर विपरीत परिणाम होता है तथा समाज की उन्नति के लिए वे समस्याएँ बाधा पहुँचाती हैं । सामाजिक आचारशास्त्र द्वारा समाज के लिए प्रतिकूल समझी जानेवाली स्थितियाँ सामाजिक समस्या है । इन समस्याओं का चित्रण एकांकीकार के एकांकियों में प्रभावी दिखाई देता है । उन्होंने समस्या के अंतर्गत आनेवाली अनेक समस्याओं का चित्रण भी किया है जो निम्नलिखित है -

3.3 उच्च-नीच जाति की समस्या -

आज की यह ज्वलंत समस्या है । प्राचीन काल से निम्न जातियाँ अन्याय और अत्याचार सहती आई हैं । महात्मा गांधी ने इस समस्या को हल करने की पूरी कोशिश की, उसके पीछे मानवता की भावना थी । पर स्वतंत्रता के बाद भी हरिजनों की सामाजिक परिस्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है । आज भी उन पर अत्याचार हो रहे हैं । आज के वर्तमान युग में भी यह समस्या अधिक बढ़ रही है । इसी कारण एकांकीकार ने इस पर कई उपाय भी बताये हैं । जिसका उपयोग समाज को हो सकता है ।

'सब में एक प्राण' एकांकी में गाँव के होटल मालिक हरिजनों को होटल में प्रवेश देते हैं। तो गाँव में अनाचार, अशांतता फैल जाती है । इस गुनाह के लिये गाँव के प्रमुख ठाकुर और ब्राह्मण पण्डित मिलकर होटल मालिक को दंड देते हैं । साथ ही पंचायत द्वारा जुर्माना भरने का आदेश देते हैं । पंडितजी गंगाजल द्वारा होटल धोने का आदेश देते हैं । मालिक गाँववालों के सामने होटल धो देते हैं । धर्म पण्डित ने बताये मार्ग द्वारा होटल मालिक हरिजनों को गंगाजल से नहाकर होटल में फिर प्रवेश देते हैं । जब पण्डित पूछते है तब होटल मालिक कहते हैं । आपने बताया या शुद्धिकरण गंगाजल से किया जाता है । मैंने होटल शुद्धिकरण के साथ हरिजनों को शुद्ध बनाया है । तब पण्डित चुपचाप चले जाते हैं । प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार कहना चाहते हैं कि इस समस्या का उपाय गंगा जल न होकर भारतीय समाज में रहनेवाले उच्च वर्णिय के मन शुद्धिकरण का ही उपाय है । इसी तरह 'दरारों के द्वीप' एकांकी में भी समस्या आ गयी है । गाँव के प्रमुख भट्टजी ब्राह्मण कुल के हैं । उनकी बेटी शालिनी नीचली जाति के चमार डाक्टर सौमित्र के साथ शादी करना चाहती है । तब गाँववाले मिलकर डाक्टर की माँ को जिंदा जला देते हैं । फिर भी वह शादी करती है । ब्राह्मण को यह बात समझती है तब कई दिन बाद गाँववालों को लेकर हरिजन बस्ती पर धावा बोल देता है । इसमें डाक्टर का बेटा और भाई को जिंदा जलाकर मार दिया जाता है । ब्राह्मण सौमित्र को भी मारने की कोशिश करता हैं । ब्राह्मण भारतीय संविधान और अपनी बेटी तथा नीचली जाति पर व्यंग करते हुये कहते हैं - " कानून उसके पक्ष में था । वह जीत गयी परंतु संस्कृति क्या कानून के बल पर पनपती है ? जो कल तक नीचे थे ! कानून में संशोधन कर देने से एक रात में बड़े नहीं हो जाते ।"[4]

भारतीय समाज की आज यही स्थिति है । जो कानून के दबाव में आकर नीचली जाति के लोगों को अपने बराबर के नहीं समझते बल्कि उसे और भी नीचे दबाने की वे कोशिश करत रहे हैं । तात्पर्य यह समस्या आधुनिक भारतीय समाज में जैसी की वैसी और बढ़ रही है ।

'रात चाँद और कहर ' एकांकी में गाँव के प्रमुख चौधरी की बेटी उमा नीचली जाति के चमार डाक्टर से शादी करती है । चौधरी कुल से ब्राह्मण है । उनकी इज्जत मिट्टी में मिल जाती है । कानून के भय से चौधरी डाक्टर को कुछ नहीं करता । परंतु समय - समय पर बेटी उमा को अपमानित करता रहता है । और धर्म का सहारा लिये गाँव में अफवाएँ फैलाने लगता है । उस समय गाँव में महामारी का रोग फैलता है । उसका संबंध बेटी उमा की शादी से जोड़कर सारे गाँव वालों से कहता है - उमा के कुकर्म के कारण गाँव में महामारी फैल रही है । उमा की सूरत देखना अपशकून है । स्वयं उसकी शक्ल नहीं देखता है । गाँव में उसे किसी के घर आने नहीं देता । जब उमा गाव में आती है, तब लोग अपना दरवाजा बंद करते हैं । उमा महामारी की दवा लेकर उसके घर आती है । तब चौधरी कहता है - " तो क्या तुम अपने आप को सत्यवती समझती हो ? तुम, तुम यहाँ से चली जाओ, कहीं तुम्हारी काली छाया मेरे मकान में न घूस जाये । "[5]

अपनी औलाद जब क्रांतिकारी मार्ग स्वीकार करती है तब भी भारतीय समाज उसे कितनी पिछे धकेल देता हैं, इसका सुंदर चित्रण करके यह बताया कि जहाँ जाति का उल्लंघन करनेवाली संतान भी हो तो क्षमा नहीं किया जाता । यह हमारी प्रवृत्ति है। क्या ऐसी प्रवृत्ति बदल सकती है ? इसी तरह 'सुनंदा' एकांकी में भी भरोसे का ब्राह्मण कुशारी है । गाँव में कम दर्ज के बसाक जात के लोग रहते हैं । बसाक जात का आदमी मरते समय विश्वास से अपनी जायदाद ब्राह्मण कुशारी को देकर मरता है । जब बसाक का बेटा बड़ा हो जाये तब उसे जायदाद देने का वादा ब्राह्मण को करना पड़ता है । लेकिन स्वार्थ के कारण वह उस जायदाद का मालिक खुद बन जाता है । ऊपर से बसाक की स्त्री पर कर्जा लगाता है । तब वह स्त्री कहती है - " कर्जा था जरूर, पर इतना नहीं कि जायदाद पर कब्जा कर दिया जाय । हम छोटी जात के हैं, इसी से सता लो, पर भगवान भी है । जिस तरह आपने हमारे साथ विश्वासघात किया हो, जिस तरह मुझे और मेरे बच्चे को तडपाया है, वैसे ही मैं कहे देती हूँ, भगवान वैसे ही .... । "[6]

बसाक की स्त्री ने कितना चाहे शाप दिया तो भी वह कुछ नहीं कर सकती है । दबे हुए समाज को आज दबोच कर रखना हम अपना शौर्य समझते है । प्रश्न यह की वह नीची जाति की न होती तो वह यह अन्याय सह नहीं सकती थी ? इस तरह के कई प्रश्न एकांकीकार ने विचार करने के लिए हमारे सामने रखे हैं । तात्पर्य यह है की आज तक हम नीचली जाति पर अन्याय करते आ रहे हैं ।

'समंदर' एकांकी में यह समस्या आ गयी है । इसमें हिंदू - सिख्ख संघर्ष है । इस संघर्ष में अजित कौर की बेटी कीर्ति पर नव युवक बलात्कार करते हैं । साथ ही पति और बेटे को मार देते है । कीर्ति और उसकी माँ अनाथ हो जाती है । सरकार ने उनके रहने का प्रबंध शांतिनिकेतन आश्रम में करी है । कई दिन बाद आश्रम प्रमुख कीर्ति की शादी करना चाहती है । तब आश्रम में रहनेवाला अनाथ अकबर का नाम लिया जाता है । कीर्ति की माँ इस शादी के लिये इन्कार करती वह कहती है - सिख्ख और मुसलमान में विवाह कभी नही हुआ है । हमारी जात उनसे बड़ी है इसलिए हम शादी नहीं होने देंगे ।

इस समस्या का हल करना मुश्कील है । परंतु अजित कौर की बेटी कीर्ति को बरबाद करनेवाले नवयुवक कौन थे ? उन्होंने क्यों नहीं सोचा कि यह अपनी जाति की है ? फिर भी उन्होंने यह कुकर्म किया । आज उसे सिख्ख जाति का युवक स्वीकार करेगा ? अकबर जैसे नवयुवक को सब मालूम होने के बाद भी वह उसे स्वीकारने को तैयार है, फिर भी माँ उसे स्वीकार नहीं करती । उच्च - नीच जाति का भ्रम निर्माण करके, बनती हुई जिंदगी को बिगाड़ देती है । यह सब कराने का हमें क्या अधिकार है ? ऐसे विचारों के कारण ही हमारे समाज में एकसंघता निर्माण नहीं हुई है । बल्कि उसे बढ़ावा घर के लोगों से मिलने के कारण यह समस्या गंभीर बन रही है । प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार ने समाज की गलतियों पर प्रकाश डाला हैं । साथ ही हमारी गलतियों पर विचार करने का सुअवसर दिया है ।

इसी एकांकी में सुमिता हिंदू विधवा आश्रम में रहती है । वह कीर्ति से नफरत करती है, क्योंकि सिख्खों के कारण वह विधवा बन गयी है । मन से कीर्ति से बदला लेना चाहती है । जब अकबर के साथ कीर्ति के विवाह कि बात होती है तब वह अकबर के साथ एक रात गुजारकर बदला लेती है । सुमिता कहती है-

''हाँ उसी की जाति के नर -पिशाचों ने मेरे पति को, बस से बाहर घसीटकर मार डाला था । अंग काट - काटकर मारा था उन्होंने । मैं नहीं चाहती थी । वह अकबर के साथ जुडकर अपने कलंक से मुक्ति पा ले ... ।''[7] भारतीय समाज में यह समस्या कितनी गंभीर है यह सुमीता के व्यवहार से मालूम होती है। मानवी मन पर इस प्रवृत्ति का कितना प्रभाव है । यह प्रस्तुत एकांकी में दिखाई देता है ।

इसी तरह 'टूटते परिवेश' एकांकी में भी इस समस्या की चर्चा है । विश्वजीत अपनी बेटी मनीषा की शादी के विरूद्ध है । वे नहीं चाहते की उनकी बेटी मुसलमान प्राध्यापक से शादी करें । वे इस शादी को रूकवाने के लिए अपने राजकीय बेटे दीपक को भेजते हैं । उनका और उनके भाई अशोक का कहना है । नीचली जाति वाले से शादी करने से सात पीढ़ियाँ बरबाद हो जाती हैं । परंतु वे इस शादी को रूकवाने में असफल होते हैं । लेकिन अंत तक मनीषा को अपनी बेटी नहीं मानते हैं, या उसके घर नहीं जाते हैं ।

'ऊँचा पर्वत : गहरा सागर ' में मोहनलाल उच्च - नीचता को माननेवाले हैं । अपनी बेटी के साथ गंगोत्री की सैर करने आये हैं । हिमालय की चोटी पर चढ़ते समय अनेक यात्री भी चढ़ रहे हैं । उनमें गुजराती महिला जयमा भी तीरथ के लिये आयी है । उसकी और मोहनलाल की बेटी मीरा की जान पहचान होती है । दोनों साथ -साथ पहाड़ पर चढ़ते हैं । यह देखकर मोहनलाल मीरा पर बिगड़ने लगता है । साथ ही कहता है- ''पर टोली मन की तो होई - एक तो बंगालिन, फिर भैस की भैस ।''[8] मोहनलाल की मीरा ने जयमा को दिया हुआ साथ अच्छा नहीं लगता है । उनका कहना है कि अपनी जाति की टोली में रहकर सफर करना चाहिए । भगवान के मंदिर में चलने वाले श्रद्धालु भी अपनी उच्च - नीच जाति को देखने लगते हैं। तब प्रश्न सामने आ जाता है इन लोगों को भगवान मिल जायेगा क्या ? सफर में कोई भी साथी हो तो क्या हुआ । वह भी एक मानव है । आपके जैसे उसको मन है । भाव, श्रद्धा सब है, फिर भी यह भेद क्यों ? ऐसे कई प्रश्न एकांकीकार ने उपस्थित किये हैं । जिसका उत्तर धर्म चिकित्सा के ऊपर निर्भर है ।

'संस्कार और भावना' एकांकी में घर का बड़ा बेटा अविनाश है । उनका परिवार उच्च वर्ण का है । अविनाश बंगाली के नीची जाति की लड़की से शादी करता है । तब उसकी माँ अविनाश को घर से निकालती

है । वह भी जिद्दी है, अपने घर वापस कभी नहीं जाता है । अतुल अविनाश का भाई अपनी माँ को बताता है कि अविनाश पिछले कई दिनों से हैजा से बीमार था । माँ का मन फिर से तड़पने लगता है वह अतुल को ही खरी - खोटी सुनाती है । तब अतुल कहता हैं -"मैं जानता था तुम वहाँ नहीं जा सकोगी और जाने से भी क्या होता है । जब तक तुम नीची श्रेणी की विजातीय भाभी को घर नहीं ला सकती, तब तक प्रेम और ममता की दुहाई व्यर्थ है तुम सब निर्मम हो ... निर्मम ...."[9] माता उच्च - नीच के जाल में मरते हुये बेटे को भी मिल नहीं सकती । यह उच्च - नीच की समस्या के कारण माँ बेटे का प्रेम, ममता, करूणा सब मिट जाती है जाति की दीवार को पार करना बुढ़ी माँ को कठिन लगता है । और अंत तक बेटे को अपनाना नामंजूर करती है ।

'कुम्हार की बेटी' एकांकी में गाँव का प्रमुख अवधानी और आचारी मिलकर नीची जाति के केसना नाम के गरीब को गाँव से निकाल देते हैं । उसका दोष आचारी गाँव का धर्मप्रमुख कहता है - "केसना सुनो । हमें इस बात का पता चल गया है, कि तुम चोरी -चोरी, नीच जातिवालों में 'वीरशैव' मत का प्रचार करते हो । तुम इन लोगों को उँची जातिवाले के विरूद्ध भड़काते है । गाँव की शान्ति भंग करते तुम्हारे कहने पर ही इन लोगोंने डाका डाला । तुम्हारी लड़की ने ....."[10] पर असल बात यह है कि केसना भक्त श्रेष्ठ है । कवि होने के कारण सदैव नम्र अधिकारी अवधानी और आचारी के सामने कुछ भी कहता नहीं । कुम्हार जाति के होने से अधिकारी उसका घर, खेत सब निलाम कर गाँव से बाहर करते हैं । इसी तरह उसी राज्य के प्रसिद्ध कवि तेनाली रामलिंगम भी उच्च - नीच जाति को मानने वाले हैं । केसना के गाँव में जब कवि आते और देखते हैं कि गाँव में कोई कवि या भक्त नहीं । तो गाँव को ही नष्ट करने का आदेश देते हैं । तब केसना की बेटी मोल्ला उनसे कहती है कि मैं रामायण की रचना करती हूँ। तब तेनालि रामलिंगम् कहते हैं - " गाँव का अपमान नहीं सह सकती । जाति की कुम्हारिन हो, अबला हो फिर भी इतना साहस ।"[11]

तेनालि रामलिंगम् जैसे विद्वान भी जाति की दीवार को मानते हैं, इसलिए उनका कहना है कि नीची जाति के लोगों में विद्वत्ता नहीं है । और 'रामायण' की रचना कुम्हार जाति की लड़की कर ही नहीं सकती । एकांकीकार ने वर्तमान परिस्थिति में पाये जानेवाली इस समस्या पर हमारा लक्ष्य केंद्रित करने का प्रयास

किया है । प्राचीन काल से वेद या उच्च कोटि की रचना शूद्र नहीं कर सकते हैं, यह विचार धारा रूढ़ हो गई थी । यही विचार आज वर्तमान समाज में दिखाई देता है। इसे विद्वान स्वीकार नहीं कर रहे हैं ।

इसी तरह 'दरारों के द्वीप' में इसका वर्णन मिलता है । "अभी - अभी सूचना मिली है कि मुरेना जिले के भड़ाली का पूरवा नामक गाँव में सवर्णा ने हरिजनों के साथ बहुत जुल्म किया इस गाँव में 40 परिवारों में 350 हरिजन रहते हैं । वे सभी प्रगतिशील किसान हैं । आसपास गाँवों में सवर्णों की बहुलता है । हरिजनों की उन्नति के कारण उनमें द्वेष और घृणा की भावना बढ़ रही है । इसलिए जब कुछ दिन पूर्व उस गाँव के पास कुछ अज्ञात गुंडों ने सवर्ण लड़की को लूट लिया तब उन्हें बहाना मिल गया । और कल दस हजार सवर्णों ने गाँव पर हमला बोल दिया । खुब लूटा, फिर आग लगा दी । पानी के पम्प तोड़ दिये, और जब स्थानीय स्कूल की अध्यापिका संतोष वर्मा ने सामान निकालने और लोगों को मदद करने का प्रयत्न किया गया तो उसे निर्दयतापूर्वक आग में झोक दिया । उसी के साथ एक बालक भी था । दोनों, सारा सामान पशुओं के साथ जलकर भस्म हो गये ।" [12] प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार ने वर्तमान समाज की बदलती परिस्थिति का चित्र सामने रखा है । आज शूद्रों पर अनेक अत्याचार हो रहे है । फिर भी कोई उनकी रक्षा नहीं कर रहा हैं । भारतीय समाज में यह समस्या दिन - ब - दिन गंभीर बनती जा रही है ।

इसी तरह वापसी, सुनंदा, ऊँचा पर्वत : गहरा सागर, संस्कार और भावना, मानव, कुम्हार की बेटी, टूटते परिवेश एकांकियों में इस समस्या की चर्चा एकांकीकार ने की है ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन के बाद हम कह सकते हैं कि कितने ही हम आज प्रगतिशील हो गये हो परंतु जातीयता नष्ट करने में असफल हो रहे हैं । मानवी अंतर्मन पर जात के बारे में घृणात्मक विचारों का पगड़ा कम करना, नवयुग समाज के सामने आव्हान है । जो बहुत कठिन है । इसलिए शिक्षा के प्रबंध द्वारा समाज का दृष्टिकोन बदला जा सकता है । सरकार द्वारा ग्रामीण भागों में शिक्षा का प्रबंध करना चाहिए । तब पढ़े - लिखे आदमी के मन में बदलाव आ सकता है ।

3.4 काम की समस्या -

काम मानवीय जीवन की सहज प्रवृत्ति है । स्त्री और पुरूष में यह भावना कम अधिक मात्रा में होती है । जब इसका अतिरेक हो जाता है तब काम समस्या निर्माण होती है । एकांकीकार ने इसके चित्रण द्वारा यह समस्या निर्माण होने के अनेक कारण बता दिए हैं । दिन - ब - दिन यह समस्या वर्तमान समाज में अधिक दिखाई दे रही है । इस पर कोई न कोई उपाय करना जरूरी है ।

'नियति' इस एकांकी में नहुष वीर मानव है । स्वर्ग के इंद्र को पराजीत करके वे स्वर्ग के मालिक बन जाते हैं । स्वर्ग नर्तकी उर्वशी को पाकर वे संतुष्ट नहीं होते । इंद्र की सुंदर पत्नी को अपनी दासी बनाने के लिये स्वर्ग के देवगण के साथ तर्कयुद्ध करते हैं । नहुष कहते हैं, स्वर्ग का जो मालिक है उसका अधिकार स्वर्ग के सभी मानव, मूर्त -अमूर्त वस्तु पर है । इंद्र की पत्नी के साथ संभोग करने के लिए हर तरफ से प्रयत्न करते है । आखिर इंद्र की पत्नी तैयार होती है । लेकिन एक शर्त नहुष के सामने रखती है । उनकी शर्त है, कि नहुष स्वयं आकर रथ से उसे घर ले जाये । जिस रथ में वह बैठेगी रथ अश्व नहीं खिंचेंगे बल्कि स्वर्ग के सप्त ऋषी खिंचेंगे। नहुष सप्त ऋषियों से प्रार्थना करते हैं । ऋषी गण रथ खिंचने तैयार होते हैं। सप्त ऋषी को रथ खिंचते समय कष्ट होने लगते हैं । और इधर नहुष को क्रोध आने लगता है । वे कहते हैं कि रथ में दो ही व्यक्ति है, फिर इतना समय क्यों ? क्रोध में हाथ लिये डंडे से नहुष सप्त ऋषी को मारने लगते हैं । तब सप्त ऋषी कहते हैं - " महाभाग नहुष । सप्त ऋषी, लोभी नहीं है । वे क्या नहीं पा सकते ? आपकी महानता को देखकर ही हमने यह कार्य स्वीकार किया था, लेकिन ऐसा लगता है कि कामवासना ने आपकी दृष्टि हर ली है । आप केवल शुद्र - मनुष्य - मात्र रह गये हैं । "[13] नहुष की कामपीडा इतनी बढ़ती है कि वह ऋषी, देव, आदि से झगड़ा मोल लेते हैं । एकांकीकार ने इस समस्या द्वारा वर्तमान समाज में घटीत होने वाली समस्याओं का चित्रण किया है । आज नहुष जैसे अनेक व्यक्ति उच्चपद पर हैं, वे इस प्रकार समाज में व्यवहार कर रहे हैं, ऐसे व्यक्ति के व्यवहार से कलह,दंगाफसाद हो रहे हैं । अपनी काम भावना के कारण यह व्यक्ति बढ़े व्यक्तियों का अपमान कर रहे हैं ।

'साँप और सीढ़ी' एकांकी में कविता अध्यापिका बनना चाहती है । संस्थापक कविता को नौकरी एक शर्त पर देने के लिये तैयार है कि वह उनके साथ रात गुजारे । गरीबी के कारण कविता अपने पति से

कहती है, "मतलब भी समझाना होगा ? रसिक रस चाहता है । वह रस जिसमें शरीर की गंध बसी हो । जो उनकी प्यास बुझा सकेगी वही अध्यापिका बनने का नियुक्तिपत्र पा सकेगी । (तीव्रसंगीत, अल्पविराम) पूँछने आयी हूँ, सौदा कर लूँ ? इस क्षेत्र में काफी अनुभवी हूँ । "[14] अध्यापन जैसे पवित्र कार्य में व्यक्ति कामपीडित होकर स्त्री को अपना खिलौना बना रहा है । कई - कई स्थानों पर अधिकारी लोग सत्ता का उपयोग कामपिपासा पूरी करने के लिए कर रहे हैं । वर्तमान समाज का यथार्थवादी चित्रण एकांकीकार ने सुंदर किया है।

इसी एकांकी में शिप्रा नामक होशियार छात्रा के पास शरीर की माँग कामग्रस्त अध्यापक करते हैं । उसे प्रथम श्रेणी प्राप्त करनी है तो अध्यापक की इच्छा पूरी करनी पड़ती है। नहीं तो पास होना भी असंभव है । विश्वद्यालय में कामपीड़ित लोग भी अपना मान सन्मान छोडकर गिर रहे हैं। तब पश्न आ जाता है कि यह अध्ययन कार्य पवित्र कैसे रहेगा ? और सृजनशील समाज का निर्माण कैसे होगा ? एकांकीकार ने इस चर्चा द्वारा समाज में रहनेवाले कामपीडित व्यक्ति द्वारा निर्माण होनेवाले अनेक गंभीर प्रश्नों की ओर हमारा ध्यान खिंचा है ।

'रक्त -चंदन ' एकांकी में भारत व्याप्त कश्मीर में यह समस्या अधिक दिखाई देती हैं । इन भागों में पाकिस्तानी फौज घुसकर स्त्रियों पर बलात्कार करती नजर आती। लोगों को मारकर उनके घर जला देते हैं पाकिस्तान से छुपे टोलियाँ आकर अनेक बेटियों को उठा ले जाती हैं । ऐसे ही एक सैनिक अपने साथियों से कहता है - " वही, वही हम उसी को मारेगा । उसने हमको धोखा दिया है, उसने हमको दौलत नहीं दिया । औरत नहीं दिया । खो, तुमने इधर औरत देखा है । कम्बख्त ये काफिर लोग कहाँ से रूपया लाता है ? कहाँ से औरत पैदा करता है ?"[15]

आज भी इस घाटी में यही समस्या है । इस पर न सरकार कुछ विचार करती है न भारतीय जनता । आज दिन दहाडे स्त्रियों का पावित्र्य छिना जा रहा है । प्रस्तुत चित्रण द्वारा यह कहा जा सकता है कि आदमी कामग्रस्त होने से सब रिश्ते - नाते भूल जाता है उसे बाकी कुछ सूझता नहीं है । वह सिर्फ कामतृप्ती के लिए नारी को ढूँढता है ।

इसी तरह 'कापुरूष' एकांकी में काम समस्या आ गयी है । हम तो आज तक यह देखते आ रहे है कि पुरूष जलदी अपनी भावनाओं पर काबू नहीं पा सकता । अतंत: बलात्कार जैसी घटनाएँ बढ़ती रहीं हैं । लेकिन इसी एकांकी में सुरेखा काम पीड़ित है । समय का उपयोग नये-नये पुरूष के साथ गुजारने में मौज समझती है । जब वह माधव के घर आती है, माधव को अकेला देखकर खुश होती है । सुरेखा शादीशुदा औरत है । लेकिन माधव को उसकी उपस्थिति अच्छी नहीं लगती । काम हो जाने के बाद माधव उसे जाने के लिये कहता है तब वह कहती है, ''रहने के लिए नहीं आयी हूँ । लेकिन संयोग से जब हम अकेले हैं, तब क्यों न उस अकेलेपन को दूर करने के लिए .....।'' [16] तात्पर्य वह माधव का उपभोग लेना चाहती है । लेकिन माधव इन्कार कर देता है । तब वह क्रोधित होकर नापाक पुरूष कहकर चली जाती है । इसी समस्या द्वारा प्रभाकरजीने स्त्रियों की बदलती मानसिकता की ओर संकेत किया है । साथ ही गंभीर इशारा किया है की पुरुष के साथ - साथ स्त्री भी कामग्रस्त बन रही है। भविष्य में समाज के लिए यह घातक है ।

इसी एकांकी में माधव की माँ प्राध्यापिका है । पति होते हुए भी वह कॉलेज के प्राध्यापक के साथ शारीरिक संबंध रखती है । वह स्वयं कामपीड़ित है । लेकिन बहू के विवाह पूर्व प्रेमी का पत्र पढ़कर उसे घर से निकाल देती है । जब अपनी माँ की असलियत सामने आ जाती है तब बेटा माधव घर छोड़कर चला जाता है । दूसरे स्थान पर माधवी के साथ अलग रहने लगता है । परिणाम कामपीड़ित शादीशुदा व्यक्ति के कारण संसार में अनेक बाधाएँ निर्माण हो रही हैं ।

'समंदर' एकांकी में कीर्ति पर नवयुवक कामांध होकर बलात्कार करते हैं । उसके बाप और भाई को मार देते हैं । तब वह पागल बनती हैं । उसकी माँ अजित कौर रोने के शिवाय कुछ नहीं करती । अंत में आश्रम का सहारा लेती हैं । इसी एकांकी में शांतिनिकेतन में रहनेवाले सुमिता और अकबर भी कामपीड़ित हैं । सुमिता विधवा होकर भी अकबर के साथ शारिरिक संबंध रखती हैं । जब भी एकांत मिले काम वासना की तृप्ती वे करते रहते हैं । शांतिनिकेतन में रहनेवाले मनु को सुमिता स्वयं के कृत्य के बारे में कहती है - ''इसके बाद हम दोनों ... सुनते हो, हम दोनों लेटे गये निरभ्र नीले आकाश के नीचे, हरी हरी दूब पर और सट गये एक दूसरे से विशुद्ध नर और नारी ।''[17] मतलब सुमिता को यह संकोच भी नहीं कि किया हुआ कुकर्म किसे सुनाये । मनु

जब यह सुनता है तब आश्रम छोड़कर चला जाता हैं । क्योंकि वह सुमिता से प्रेम करता था । कामपीडित व्यक्ति दूसरे का सच्चा प्यार समझ नहीं सकती हैं । ऐसी व्यक्ति के हाथों से अनेक नवयुवतियों की जिंदगी कैसी बरबाद हो रही हैं । इसका चित्रण एकांकीकार ने किया हैं ।

इसी तरह 'टूटते परिवेश' एकांकी में मनीषा और दीप्ति दोनों बहने कामपीड़ित हैं । दीप्ति हिप्पियों जैसी वेशभूषा करती है । सिगरेट पीती है । रातभर दोस्तों के साथ रहती है । घर आने पर पिता को नाटक की रिहर्सल का बहाना बताती है । मनीषा तो अपना घर भल चुकी है । रात को घर वापस न आने के कारण पिताजी दीप्ति से पूँछते है की मनीषा कहाँ है ? तब दीप्ति कहती, ''मुझे नहीं मालूम कहाँ है ? गयी होगी किसी मित्र के साथ दिवाली-नाइट मनाने ।'' [18] कामपीडीत बहनें घर में रहने के कारण घर का माहौल बदल गया है । उनका भाई घर आना टाल देता है । पिताजी का तो जीना मुश्कील हो गया है । मनुष्य स्वयं अपने पर नियंत्रण रखें तब यह समस्या कम हो सकती है, नहीं तो हर घर, संसार में पारिवारिक संबंध टूटते जायेंगे ।

'उपचेतना का छल' एकांकी में तारा और शंकर दोनों पति-पत्नी, कामपीड़ित हैं । शंकर की दो शादियाँ हो चुकी हैं । तीसरी पत्नी तारा हैं । और तारा भी उसी की तरह है । वह एक पुरूष के साथ रहना नहीं चाहती । खुद पति शंकर की दूसरी शादी करवा देती है। और नवयुवक प्रभात के साथ राते गुजारती हैं । शंकर से तलाक लेती है फिर भी उसके साथ अनेक रातें गुजारती हैं । प्रभात भी तारा के साथ संबंध रखता है । और शादी के लिए नई दुल्हन घर में लाता है । कभी - कभी समाज में इसी तरह के व्यक्ति देखने को मिलते हैं । जिसको घर से प्रेम नहीं रहता । एकांकीकार ने इसके चित्रण द्वारा कामग्रस्त की मानसिकता दिखाई है । ऐसे व्यक्ति को न परिवार का प्यार मिलता है और न ही प्रेमियों का ।

'कूपे' एकांकी में सर्वजीत, सांत्वना, जुडिया, मार्या, विनोद सभी पात्र कामपीड़ित है । सर्वजीत हिप्पियों के टोली में शामिल होता है । हर समय स्त्री- पुरूष के संबंध पर बोलता है । वह सांत्वना से कहता है, ''बुरा मान गयी ? प्लीज । बात यह है, कि मैं साथी के बिना नहीं रह सकता । बहुत घूमा हूँ । हिप्पियों के साथ । जिप्सियों के साथ । कितनी मुक्त और सहज है, ये विदेशी युवतियाँ । बड़े मजे के साथ कह सकती

हैं ''लाटस् आफ बॉय फ्रेण्ड्स, लाटस् आफ सैक्स ।'' मै भी कह सकता हूँ - लाटस् आफ फ्रेण्ड्स, लाटस् आफ लव मेकिंग ।''[19] बातों - बातों में रेल के डिब्बे में सांत्वना पर बलात्कार करने की कोशिश करता है । परंतु असफल हो जाता है। सांत्वना विधवा है । वह भी कामपीड़ित है । वह विनोद के साथ रातें गुजारती हैं । विनोद उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है परंतु सांत्वना उसे रोक लेती है । तब विनोद अपना शारीरिक संबंध तोड़ने की धमकी देता है । तब वह कहती है कि तुम्हारे साथ शारीरिक संबंध रखना जरूरी है क्योंकि यह शरीर की प्यास है । मैं एक के बंधन में नहीं रह सकती । शादी एक सामाजिक बंधन है जिसे मैं स्वीकार नहीं कर सकती ।

इसी एकांकी में मार्या भी कामपीड़ित है । वह सांत्वना से कहती है पुरूष जिस तरह नई - नई स्त्री चाहता है उसी तरह ''मेरे लिये यह जानना जरूरी नहीं है । मैं भी पुरूष की तरह प्यासी हूँ । मुझे भी तृप्ति चाहिए । पुरूष कोई भी हो । वह सर्वजीत भी हो सकता है । शायद वही है । लेकिन तुम यह सब क्यों जानना चाहती हो ?''[20] इसके चित्रण द्वारा एकांकीकार ने समाज का पतन कैसे हो रहा है यह बताने की कोशिश की है ।

कामग्रस्त महिला रिश्ते- नाते सब छोड देते हैं । सिर्फ नर - नारी का नाता जोड़ देती है । अपनी कामेच्छा पूर्ण करना भी मार्या का उद्देश्य है । अंत में मार्या अनेक बच्चों को जन्म देती हैं । जिसका बाप उसे मालूम नहीं है । सांत्वना इस कामपीड़ा के कारण खुद के बच्चों से अलग होती है । और अपने बच्चों की नजरों में गिर जाती है । स्वार्थ, काम भावना जिंदगी को नए मोड़ पर ला देती है ।

इसी तरह 'लिपस्टीक की मुस्कान' एकांकी में रीता शादीशुदा औरत है । वह मॉडेलिंग करती है । कुमारी लड़कियों के क्लब में रात भर रहती है । खुद को मिस रीता कहने के लिये औरों को कहती है । अनेक दोस्तों के साथ बाहर घुमती हृ, फिरती है । रीता का बच्चा भी हैं । जब मॉडेलिंग के लिय वह बाहर जाने की तैयारी करती है । तब बच्चा आकर ड्रेस खराब करता है । तब पति राकेश से कहती है, कि डायरेक्टर ड्रेस देखकर बता देते हैं कि ड्रेस को कितनी बार किस-किस ने छुआ हैं । तब पति राकेश कहते है -''ड्रेस ... बाई गॉड, वे तो तुम्हे देखकर ही बता सकते हैं, लेकिन ... बेबी को छुने का मतलब तो ममता है ।''[21] दु:ख की बात यह है कि पति

को भी मालूम है । पत्नी की भावना, स्वार्थी कामजीवन; फिर भी वह कुछ नहीं कर सकता । क्योंकि स्त्री भी पुरूष की तरह अपनी काम इच्छा तृप्त करने में लगी है । रीता भी ऐसी स्त्री है । वह कामपीड़ित होने के कारण फैशन की तरह हर एक को बदलना चाहती है । इसमें पति, खुद का बच्चा, घर की नौकरानी और जिंदगी में आनेवाले नवपुरूष भी है ।

एकांकीकार ने समाज में फैशन के नाम पर किये जाने वाली काम प्रवृत्ति पर और आधुनिक स्त्री-पुरूषों के वर्तन की ओर गंभीर इशारा किया है । जैसे रीता का संसार अंत में बरबाद हो गया हैं । उसी तरह अनेक संसार बरबाद हो रहे है । प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार कहना चाहते हैं कि फैशन के नाम खुला देह प्रदर्शन हो रहा है । इसी कारण काम समस्या को अधिक बढ़ावा मिल रहा है ।

'मर्सीडीज और ढोलक' एकांकी में श्रीमती चावला अपने सारे दोस्तों को पार्टी में बुलाती है । उसमें नाटककार सुशील वर्मा और कवि शर्मा है । श्री. माथुर, श्रीमती माथुर श्री. मृदुला, श्रीमती मृदुला, मि. थापर, मिसेस थापर और खन्ना परिवार है । ये सब अमेरिका में रहने वाले हैं । एक दूसरे के साथ शारीरिक संबंध रखते हैं । सुंदर सुशील वर्मा को देखकर मिसेज खन्ना उसे पार्टी से बाहर ले जाती है । शराब पीने के लिये कहती है । सुशील को अपने पर अच्छा नाटक लिखने के लिये कहती है । उसका हाथ पकडकर उसे बिनती करती है- ''तुम्हारी लेखनी के लिए प्रिय । (पीने का स्वर और फिर एक दीर्घ नि:श्वास) मेरे घर आओ न । वही नाटक के बारे में चर्चा करेंगे । खन्ना तो आज कल फूड मिनिस्टरी में है । अक्सर रात को देर से लौटते हैं, और मैं अकेली बोर होती रहती हूँ ।'' [22] याने मिसेस खन्ना सुशील के साथ संबंध जोड़ना चाहती है । न ही सुशील, वह मि. थापर, मि. मृदुला, मि. माथुर के साथ पहले से संबंध रख चुकी है । वह नया शिकार खोजती रहती है । अप्रत्यक्ष पति घर नहीं है तुम आज ही आना यह कहना संबंध को स्वीकृति देना ही है । आज कल के पति खूब पैसा कमाने लगे हैं । और उनकी पत्नियाँ दूसरे के बिस्तर सजा रही है । यह चित्र अक्सर दिखाई देता है । कामग्रस्त स्त्री - पुरूष पीड़ित होने के कारण जीवन को देखने की दृष्टि बदल रही है। मिसेज खन्ना जैसी अनेक स्त्रियाँ नवयुवकों को कामग्रस्त बनाकर बरबाद कर रही हैं । इसी दृष्टि से देखा जाये तो सक्षम नागरिक और कर्तव्य नई

पीढ़ी कैसे निर्माण हो सकती है ? यह प्रश्न एकांकीकार के सामने है । प्रस्तुत चित्रण द्वारा उच्चवर्गीय परिवार में निर्माण होनेवाली कामजीवन की चर्चा की है ।

'अर्धनारीश्वर' एकांकी में यह समस्या मिलती है । शलभ कामांध होकर ज्योति के पीछे लगता है । ज्योति का रूप सौंदर्य उसको मोहित करता है । जब वह ज्योति के पास जाने की कोशिश करता है, तब ज्योति उसे प्रश्न करती है कि तुम्हारा और मेरा रिश्ता क्या है ? तब भी पीछे नहीं हटता । ज्योति कहती, "तुम ... तुम नहीं मानते ... कम उद्दण्ड हो, तुम निर्लज्ज हो, तुम कामी हो ..."[23] तब शलभ कामातुर होकर कहता है, "बोलो ... स्नेह को पुकारोगी .. पर वह तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता । वह तुम्हारा प्राणदाता है । उसने तुम्हें रूप दिया है, पर वह तुम्हें भय-मुक्त नहीं कर सकता । कितना ही काँपी, कितना ही पुकारो, वह अपने स्थान से हिल न सकेगा । वह तिलतिल कर जलता रहेगा और तुम्हारा रूप निखरता रहेगा । उसके जलने में तुम्हारा कल्याण है ।[24] स्त्री और पुरूष होने के कारण कोई संबंध नहीं लगता । वह आखिर ज्योति से चिपक जाता है । इंद्र स्त्री -पुरूष संबंध के बारे में कहता है कि पुरूष के मनोरंजन के लिए ब्रम्हा ने स्त्री की रचना की है । तो विश्वामित्र स्त्री के बारे कहते हैं पुरूष को नीचा गिराने के लिए ही नारी का निर्माण किया है । तात्पर्य यह कि हर पुरूष स्त्री को वासना पूर्ति का साधना समझता है । इसी कारण पुरूष रूपी शलभ अपनी वासनापूर्ति के लिए ज्योति से बीना पूछे उसको अपनी बाहों में भरता है । और अंत दोनों का हो जाता है । प्रकृति का अतिरेक जीवन का अंत है । यह इस चित्रण द्वारा स्पष्ट करना चाहते हैं ।

'सूली पर टँगा श्वेत कमल' एकांकी में विंदू जहाँ नौकरी करती है वहाँ का बॉस कामग्रस्त है । आनेवाली सभी लड़कियों का उपयोग करता है । विंदू बार-बार ऐसी नौकरियाँ छोड़ देती हैं । नई नौकरी के साक्षात्कार में वह अपना अनुभव कथन करती है, "मै अपनी योग्यता और अयोग्यता के बारे में जो कहूँगी वह तो प्रमाण नहीं माना जाएगा, लेकिन काम छोड़ने के कारण निस्संकोच बता सकती हूँ । पहले स्थान पर काम करते हुए बॉस ने एक दिन मुझसे कहा कि आज मुझे कुछ गोपनीय काम करने हैं, आप देर तक रूकेंगी । मैं जानती थी कि उस दिन तीन घंटे बिजली नहीं थी । मैंने, उत्तर दिया, सर ! मैं अंधेरे में काम करने की अभ्यस्त नहीं हूँ । होना

चाहती भी नहीं । उसके बाद क्या हो सकता था, वही हुआ । दूसरे बॉस मुझसे और मेरे काम से इतने प्रसन्न हुए कि शराब पीने का आग्रह कर बैठे । मैं वह आग्रह भी स्वीकार न कर सकी और .....।" [25]

कामग्रस्त बॉस ने काम से निकाल दिया । याने जो युवतियाँ बॉस को खुश करती हैं उन्हे ही नौकरी मिल सकती है । विंदु जैसे पढ़ी- लिखी योग्यता पूर्ण युवती को नौकरी से हाथ धोना पड़ता है । और आगे नौकरी मिलने की भी संभावना कम नजर आती है । इसके चित्रण द्वारा एकांकीकार बताना चाहते हैं कि छोटे - मोटे कार्यालय में नवयुवतियाँ इस समस्या की शिकार हो रही हैं । ऐसी नवयुवतियों को कहना चाहते हैं कि नौकरी के लालच में शरीर को मत बेचे । नहीं तो जिंदगी बरबाद हो जाएगी ।

इसी एकांकी में पूनम भी कामग्रस्त है । वह मॉडेलिंग करती है । शराब पीती है, और दूसरों के साथ राते गुजारती हैं । वह अपनी पड़ोसन नीलिमा को भी फँसाने की कोशिश करती है । अपने बारे में वह नीलिमा से कहती है,"छोड़ यार भाग्य की (धीरे से) सुन, पास आ, एक रहस्य बताती हूँ । कभी-कभी होटल कैमिली जाती हूँ । एक रात के एक हजार तक मिल जाते हैं ।" [26] पूनम यौन पीड़ित होने के कारण स्वयं यह काम करती है और नीलिमा को भी यह काम करने के लिए उकसाती है । आजकल रुपयों के लालच में शहर में लड़कियाँ शरीर बेच रही हैं । इसी एकांकी में गोविंद ललित स्टुडिओ मालिक पूनम जैसी अनेक युवतियों को फँसाकर उनका उपयोग करता है । शेखर रंजन पुलिस अधिकारी होटल कैमिली पर छापा मारकर कॉलगर्ल रॅकट को पकडवाता हैं । उसमें गोविंद को गिरफ्तार किया जाता है । वर्तमान समाज में यह समस्या गरीबी के कारण बढ़ती हुई नजर आ रही है । जादातर गरीब परिवार की लड़कियाँ मजबूरन रुपयों के लिए कामग्रस्त हो रही हैं ।

इसी तरह एकांकीकार ने 'समरेखा-विषमरेखा' 'साँप और सीढ़ी, 'साँकले,' 'समंदर' 'रक्तचंदन' 'कापुरूष' 'टूटते परिवेश' एकांकियों में इसका चित्रण किया है ।

अंत में हम कह सकते हैं कि काम समस्या से समाज में अनेक युवक-युवतियों के जीवन भ्रष्ट हो रहे हैं । साथ ही काम पीडित व्यक्ति के कारण अनेक प्रश्न निर्माण हो रहे हैं । इस समस्या को देखने की दृष्टि

बदलने के लिये युवक - युवतियों को बचपन से ही योग्य लैंगिक शिक्षा मिलनी चाहिए । जिसके कारण लैंगिक आकर्षण कम हो जाएगा और जीवन को देखने की दृष्टि बदल जाएगी । तब यह समस्या कम हो सकती है । नहीं तो वर्तमान स्थिति में शहर और ग्रामीण जीवन में इसका रूप भयानक है ।

3.5 प्रेम की समस्या -

प्रेम तो आदमी की उपज है । आदमी को आदमी बनाने का प्रमाण देती है । फिर भी इसमें स्वार्थ, वासना, जात, धर्म आने के कारण समस्या की शुरूवात होती है । एक - दूसरे से प्यार करनेवाले इस बंधन के कारण एक दूसरे को भूल जाते हैं । या कभी - कभी सामाजिक बंधंन के कारण छोड़ देते हैं । इस समस्या के उत्पन्न होने अनेक कारणबताते हुए एकांकीकार ने इस पर उपाय भी बता दिए हैं । प्रस्तुत समस्या की चर्चा निम्नलिखित एकांकियों में की है ।

'साँकले' एकांकी में परेश पुष्पा से बचपन से प्रेम करता है । परेश सैनिक बनकर सीमा पर चला जाता है । तब पुष्पा की शादी हो जाती है । दुर्भाग्य से पति उसे छोड़ देता है । जब परेश वापस आता है । तब दोनों की मुलाकात हो जाती है । परेश उसके साथ शादी करना चाहता है । तब पुष्पा कहती है - ''आपके प्यार को जानती हूँ । परंतु इस प्यार में करूणा आ मिली है । मैं आपको प्यार करती हूँ । पर उसमें कृतज्ञता अधिक है । आवेश और बेबसी में किया गया, प्यार - प्यार नहीं होता । जिसे पाना होगा, अधिकार से पाऊँगी ।''[27] सच्चा प्रेम करके भी पुष्पा परेश से शादी नहीं करती । प्रेम को करूणा समझती है । और परेश को छोड़ देती है । इस चित्रण द्वारा प्रेम में अनेक कठिन प्रश्नों को एकांकीकार ने समाज के सामने लाया है ।

इसी तरह 'पूर्णाहूति' एकांकी में सम्राट अशोक की बहन राजकुमारी संघमित्रा और कलिंग के राजकुमार 'कुमार' एक - दूसरे से प्रेम करते हैं । सम्राट अशोक विश्व साम्राज्य की इच्छा से कलिंग राज्य पर आक्रमण कर देते हैं । सम्राट अशोक का अधिपत्य कलिंग राजकुमार अस्वीकार कर लेता है । तब उसे मृत्यु दण्ड की सजा दी जाती है । संघमित्रा अपने प्यार को बचाने के लिए कुमार को अधिपत्य स्वीकारने के लिये कहती है । तब कुमार कहते हैं - ''मगध सम्राट ने मेरा सिर काट डालने की आज्ञा दी है । प्रणय प्राणों की भिक्षा नहीं माँगा

करता राजकुमारी ! मैं उस आज्ञा का सम्मान करूँगा । कुछ क्षण बाद जब मनमोहनी उषा संगीत अला पती हुई, आकाश से उतरेगी । तब उसी के साथ मेरी मृत्यु भी मेरा अलिंगन करने आयेगी । मेरी मृत्यु में मेरा कल्याण है । कलिंग के महानाश की बेला, जब असंख्य युवतियों का सुहाग-सिंदूर रक्त घुल गया हो, तो मैं तुम्हारी माँग में सिंदूर नहीं भर सकता । आज मेरी आँखें तुम्हारा रूप देखने अयोम्य हैं । आज मेरे कान तुम्हारी प्रणय रागिनी सुनने के अयोम्य है ।"[28] इस चित्रण द्वारा प्यार में देश - प्रेम की समस्या निर्माण होती है । संघमित्रा को कुमार चाहकर भी स्वीकार नहीं करते । उसे अपनाने में अपने आपको गुनाह मानते हैं । राज्य के लिये अपना प्रेम कुर्बान कर देते हैं । एकांकीकार ने इस एकांकी में आदर्शवादी निस्वार्थी प्रेम का चित्रण प्रभावी किया है ।

'अभया'एकांकी में रोहिणी बाबू अभया नामक विवाहित औरत से प्रेम करते हैं । अभया का पति जब तक उसे लेकर नहीं जाता, तब तक दोनों एक साथ रहते हैं । लेकिन अभया का पहला पति राखाल मिलने के उपरान्त वह चली जाती है । दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं । परंतु समाज के बंधन के कारण एक दूसरे के हो नहीं पाते । जब राखाल के साथ अभया चली जाती है । तब रोहिणी बाबू पत्र लिखकर खुश हाली समाचार लेते रहते हैं । उनका प्रेम तो कठिन प्रसंग द्वारा निर्माण हो गया था । अभया अपने पति को ढूँढ़ने शहर आती है । तब रोहिणी बाबू से मुलाकात होती है । रोहिणी बाबू के मित्र राखाल बाबु को ढूँढकर लाते हैं । तब तक अभया रोहिणी बाबू के घर पर रहती है । भावनिक संबंध निर्माण हो जाने पर भी वे विवाह के बंधन और शारीरिक संबंध आने नहीं देते हैं । इसी कारण उनका प्रेम पवित्र रह जाता है । राखाल के कारण दोनों का मिलन नहीं हो पाता है । लेकिन उनका प्रेम आदर्श निर्माण कर देता है । प्रस्तुत चित्रण द्वारा निस्वार्थ प्रेम का सफल चित्रण एकांकीकार ने किया है ।

'कापुरूष' एकांकी में मंजु का पहला प्रेमी अविनाश है । अविनाश और मंजु एक साथ घुमते रहते हैं । चार वर्ष तक एक - दूसरे से प्रेम करते हैं । मंजु अविनाश से बेहद प्रेम करती है । परंतु अविनाश उसे धोखा देता है। अविनाश का कहना है कि जिसे वह प्रेम करता है उसके साथ शादी नहीं करनी चाहिए । मंजु को प्रेम मिलते-मिलते बिखर जाता है और मंजु नसीब को कोसती रहती है । वर्तमान परिस्थिति इसी तरह बन रही है ।

आज कल प्रेम में धोखा देनेवालों की संख्या बढ़ने का कारण एकांकीकार बताते हैं कि मनुष्य का मन चंचल हो रहा है । इसी प्रवृत्ति के कारण यह समस्या बढ़ रही है ।

'समंदर' एकांकी में मनु शांति आश्रम में रहनेवाला नवयुवक है । उसके माँ-बाप का कोई पता नहीं है । हर व्यक्ति को वह प्यार से खुश करता रहता है । सुमिता हिंदू विधवा है । उससे वह प्रेम करता है । अपना घर बसाना चाहता है । जब सुमिता अकबर के साथ संबंध रखना शुरू करती है तब प्यार में नाराज होकर मनु आश्रम छोड़कर चला जाता है । सुमिता को यह मालूम होता है लेकिन समय निकल जाने के कारण उनका मिलन हो पाना मुश्किल हो जाता है । इसी तरह 'उपचेतना का छल' एकांकी में तारा शादीशुदा औरत होकर भी नवयुवक प्रभात से प्रेम करती है । तारा अपने पहले पति को तलाक देती है । प्रभात भी तारा से प्रेम करता है । परंतु शादी वह दूसरी लड़की से करता है । अंत में तारा न शंकर की पत्नी रहती है न प्रभात की । उसे तो समाज कार्य हा करना पड़ता है । इस चित्रण द्वारा एकांकीकार ने चंचल प्रेम द्वारा निर्माण प्रश्नों को सामने लाया है ।

'भोगा हुआ यर्थाथ' एकांकी में शुभा मास्टर मकरंद से प्रेम करती है । दोनों शादी करने का फैसला करते हैं । जब शुभा के पिता पारसनाथ को पता चलता है तब मकरंद को गुंडों द्वारा मारकर शहर से बाहर कर दिया जाता है । शुभा और मकरंद चुपके से शादी करके, दूसरे शहर में रहने लगते हैं । पारसनाथ की बेइज्जत हो जाती है । जब वह माँ बनने वाली है । तब बेटी को बड़े प्यार से घर लाते हैं और उसके दूध में जहर मिला देते हैं । मकरंद शुभा के प्यार के लिये जिंदगी भर तड़पता है । प्रस्तुत चित्रण द्वारा प्रेम में झूठी प्रतिष्ठा आने से प्रेम समस्या कैसी निर्माण होती है यह दिखाया है । घर की मर्यादा के कारण मंजु का प्यार अधूरा रह जाता है ।

'समरेखा-विषमरेखा' एकांकी में प्रेम की समस्या आ गयी है । रेवा, रंजन से प्रेम करती है । रंजन चित्रकार है । दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं । शादी के बारे में रेवा रंजन से पूँछती है । तब रंजन इंकार कर देता है । रेवा को वह कला समझता है । कला के साथ विवाह नहीं करता । रेवा की शादी बॅरिस्टर केशव से होती है परंतु वह रंजन को भूल नहीं पाती है । रंजन परिस्थिति से हारकर रेवा के पास आता है । तब उसके

संसार में अनेक प्रश्न निर्माण होते हैं । प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार ने कलाकार के चंचल प्रवृत्ति का दर्शन कराया है । कभी - कभी ऐसे लोग प्यार को न समझकर दूसरों के लिए अनेक प्रश्न कैसे निर्माण कर देते हैं यह बताया है ।

इसी तरह 'डरे हुए लोग' एकांकी में यह प्रेम बाप बेटे का है । विमल अपनी शादी से पहले बेटे को बहुत प्रेम देता है । परंतु बेटा तापस यह मानता नहीं है । हर समय तापस यह प्रश्न पूँछता है कि उसके साथ इतना क्यों प्रेम किया जाता है । पप्पा जो प्रेम करते हैं वह सच्चा प्रेम नहीं । एक दिखावा है । अंत तक वह अपनी माँ, मास्टर से झगड़ता है। और सच्चे प्रेम के लिये तरसता है । इसी एकांकी में, श्यामली मास्टर नंदन से प्रेम करती है । लेकिन उनके साथ शादी नहीं कर सकती । घर की परिस्थिति संम्भालने में ही जिंदगी कट जाती है । इसी चित्रण द्वारा एकांकीकार बताना चाहते हैं कि सच्चे प्यार को भी परिस्थिति के सामने कभी - कभी झुकना पड़ता है ।

'प्रकाश और परछाई' में सुधा हरिश नामक लडके से प्रेम करता है । हरिश अपनी पिछली जिंदगी में किये गये गुनाहों की कबुली देता है । तब सुधा के घर के लोग शादी को विरोध करते हैं । हरिश भी सुधा से सच्चा प्यार करता है, इसी कारण दो बार जेल जाने से मिल गयी सजा और कारण बताता है । तब से हरिश सुधा के जीवन में तूफान आ जाता है । दोनों को घर के लोग अलग कर देते हैं । और सुधा का प्रेम अधूरा रह जाता है । सुधा भी सच्चे दिल से हरिश को चाहती है । जब अपने चाचा की काली करतूत उसके ध्यान में आती है तब वह हरिश को ढूँढ़ने घर से चल पडती है । दोनों का सच्चा प्यार होने के कारण भी मिलन नहीं हो पाता है । तब सुधा की सहेली उमा कहती है -''यह भी तू ठीक कहती है । मेरी बुद्धि भी काम नहीं देती । दुनिया को देखती हूँ तो विवाह न करने की बात जँचती है, पर जो कुछ अब तक होता आया है क्या वही आगे भी हो ? क्या नारी में अपने प्रेम से पुरुष की प्रवृत्तियों को बदल देने की शक्ति नहीं है ? क्या प्रेम किसी के दोषों को धो नहीं सकता ? किसी को पवित्र नहीं कर सकता ? इन सब बातों पर विचार करती हूँ तो मेरा मन कहता है कि तु हरिश से शादी कर ले ।"[29]

उमा यह सब कहती है, लेकिन सुधा को हरिश का प्यार नहीं मिलता। दो प्रेमी प्यार के अधूरे बंधन में ही टूट जाते हैं । प्रस्तुत चित्रण द्वारा यह बताया है कि घर की उज्जत झूठी शान प्रेम में अनेक प्रश्न निर्माण कर रही है । जब तक आप आँखें खोलकर सच्चा प्यार स्वीकार नहीं करते तब तक समस्या बढ़ती रहेगी ।

'सूली पर टँगा खेत कमल' एकांकी में विंदू डॉ विकास से प्रेम करती है । विकास भी उससे प्रेम करता है । परंतु विंदु उनसे शादी नहीं कर सकती है । दोनों के प्रेम में विन्दु की घर की परिस्थिति बाधा बनती है । विकास जब उनके घर आते हैं तब विंदु की माँ स्पष्ट कहती है - "शादी का भ्रम । वह तुमसे शादी नहीं कर सकती । अभी नीलिमा और प्रतिभा की पढ़ाई पूरी नहीं हूई है । उनके विवाह करने है । वह इस घर से कैसे जा सकती है ? उसी ने बनाया है । इसे बरबाद करने को मत उकसाओ उसे और अब उसकी उम्र भी तो ....(संगीत अप और डाउन) तुम अगर शादी करना चाहते हो तो मैं नीलिमा का हाथ तुम्हारे हाथों में सौंपने को तैयार हूँ.... ।"[30] तात्पर्य माँ दोनों की शादी होने नहीं देती । बिन्दु घर की पूरी जिम्मेदारी संभालती है । सभी के लिए नौकरी करती है । माँ अपनी दूसरी बेटी का हाथ विकास को देने के लिए तैयार है लेकिन विन्दु को नहीं । अंत: में विन्दु विकास को चाहकर भी छोड़ देती है । दोनों का प्रेम अधूरा ही रहता है । विन्दु के प्रेम में उसके परिवार का प्रश्न आ जाता है । वर्तमान समाज में इस तरह की प्रवृत्ति बढ़ रही है । अपने स्वार्थ के कारण परिवार के लोग प्रेम बाधाएँ निर्माण करके इस समस्या को अधिक बढ़ावा दे रहे हैं ।

इसी तरह तीसरा आदमी, अभया, पाँच रेखाएँ, नियति, सवेरा, साँकले, पूर्णाहूति, समंदर, माँ, कापुरूष, टूटते - परिवेश, डरे हुए लोग, सुनंदा, कुपे, भोगा हुआ यथार्थ, आँचल और आँसू, संस्कार और भावना, इन एकांकियों में प्रेम समस्या की चर्चा आ गयी है ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन के बाद कहा जाता है, कि प्रेम मूलत: मानवी प्रवृत्ति है । लेकिन प्रेम में स्वार्थ प्रवृत्ति, पारिवारिक, जिम्मेदारी, समाज में पायी जानेवाली उच्च - नीचता और अहंम भाव, अधूरी शिक्षा, वैयक्तिक दुष्मनी इन कारणो द्वारा अनेक प्रश्न निर्माण हो रहे हैं । इस समस्या पर एकांकीकार ने उपाय भी वताये । उदाहरण में 'अभया' एकांकी का प्रेम समाज के सामने आदर्श निर्माण कर देता है । यह आदर्श समाज में लिया तब मानव अपना जीवन सुखमय बना सकता है, और आदर्श समाज निर्माण कर सकता है ।

3.6 परिवार नियोजन की समस्या -

भारत कृषिप्रधान देश है । खेती व्यवसाय के कारण किसान और जनता अशिक्षित रही है । धार्मिक श्रद्धा की भावना, केंद्रीय परिवार, संतान को ईश्वर का प्रसाद समझना, आदि के कारण पाश्चात्य देश की तरह भारत आधुनिक नहीं बना है । फलत: परिवार नियोजन जैसी समस्या को समाज में बढ़ावा मिल रहा है । एकांकीकार ने इस समस्या की चर्चा निम्नलिखित एकांकीयों में की है ।

'टूटते परिवेश' एकांकी में परिवार नियोजन की समस्या आ गयी है । विश्वजीत और करूणा के परिवार में विवेक, दीपक, विमल, मनिषा, दीप्ति, इंदु तीन बेटीयाँ हैं । घर में किसी को किसी का पता मालूम नहीं है । इतने सदस्य होने के कारण विश्वजीत की कोई सुनता नहीं है । न घर में धार्मिक विधि होती है, न रीतिरिवाज । विश्वजीत दीवाली के रात लक्ष्मी पूजन के लिये सभी की राह देखते हैं । परंतु कोई सदस्य नहीं आते है । मनीषा बेटी घर में आती ही नहीं । वह दोस्तों के साथ दीवाली नाइट मनाने जाती है । दीप्ति बेटी हिप्पियों जैसी वेशभूषा करती है । सिगारेट पीती है । नाटक के रिहर्सल के बहाने रात दोस्तों के साथ गुजार देती है । इस स्थिति के कारण विमल का बेटा परदेश गया । वह वापस कभी घर नहीं आ गया है । दीपक नेता बन गया है । वह कभी घर की तरफ देखता भी नहीं है । विवेक अपने नौकरी के पीछे पड़ा रहता है । पूरे वर्ष में एक बार दीवाली आती है । सभी बच्चे आयेंगे यह भावना विश्वजीत की है लेकिन कोई घर नहीं आता है । तब वे कहते हैं - "क्या दिन देखने पड़े ! चालीस - चालीस व्यक्तियों के बीच में बैठकर पूरे विधि -विधान के साथ घंटा-घंटा भर पूजा की है, सब समाप्त हो गयी । बाकी रह गये दो असंतुष्ट बच्चे और एक गायत्री मंत्र ।"[31]

तात्पर्य इतना बड़ा परिवार होने के कारण विश्वजीत और करूणा अपने बच्चे को अच्छे संस्कार शिक्षा देने में कम पड़ गये हैं । इसी कारण घर में दिवाली जैसे त्यौहार पर बच्चे अपने मर्जी से बाहर घुम रहे हैं । यह विश्वजीत के घर का चित्रण न होकर समूचित भारतीय समाज का है । जो इस समस्या को गंभीर दृष्टि से देखने को मजबूर कर देता है ।

'रसोई घर में प्रजातंत्र' एकांकी में रामलाल का परिवार इतना बड़ा है कि घर में नौकर, अधिक समय नहीं रहता हैं । घर के सदस्य नई - नई चीजों की माँगे करते हैं । तब अपने मित्र शामलाल से कहते हैं - ''अब तुम्हें क्या बताऊँ । इसी घर के इन्तजाम से परेशान हूँ, शालों को बुलवाकर मुक्त खोरों की एक चीज खड़ी करूँ ? मेरा कुटुंब एक छोटा-मोठा राज है । राज ! 50 प्राणी है, और नम्बर बढता ही रहता है ।''[32]

बड़ा परिवार समाज के लिये खतरा है । उसी तरह देश के लिये भी । इस एकांकी द्वारा भारतीय समाज में बढ़ती हुई संख्या पर निर्देश किया गया है । इसी बढ़ती हुई अबादी से अनेक प्रश्न निर्माण हो रहे हैं । ऐसे प्रश्नों का उत्तर खोजना भविष्य में हमारे लिए बहुत बड़ा खतरा होगा । अपना खुद का परिवार छोटा बनाना और दूसरों को छोटे परिवार का लाभ बताना हमारे जैसे शिक्षित लोगों का कार्य है, यह कार्य एकांकीकार ने अपनी एकांकी द्वारा किया है ।

इसी तरह 'साँकले' एकांकी में विश्वनाथ मामूली स्टेशन मास्टर है । रेल विभाग में काम करते हैं । उनकी आय कम है । घर में पुष्पा, दीपक, अजित, विश्वनाथ और उनकी पत्नी है । फिर भी विश्वनाथ पुष्पा को अनपढ़ रखते हैं । जब उसकी शादी होती है । तब उसके पति अनपढ़ पुष्पा को तलाक देते हैं । दीपक पढाई के लिये शहर जाता है । वह वापस घर नहीं आता है शहर में अपनी पसंद की लड़की से शादी करके रहने का इरादा माँ से बता देता है । अजित बिना नौकरी से घर में पड़ा रहता है । अच्छी शिक्षा उसे नहीं मिलती है । विश्वनाथ बढ़ते परिवार का बोझ नहीं उठा पाते हैं । अत: सभी बच्चे उन्हें छोड़कर चले जाते हैं । क्या विश्वनाथ जैसे पढे-लिखे आदमी ने परिवार पर नियंत्रण किया होता तो यह प्रश्न सामने आ जाता ? फिर भी एक बच्चे के लिए शिक्षा का प्रबंध करते न करते तो दूसरा, तीसरा बच्चा पैदा हो जाता है, और इस चलती हुई जिंदगी में वे गहरा विचार करना भी छोड़ देते हैं । अत: में अनेक अपत्तियों का सामना करते-करते थक जाते हैं ।

एकांकीकार ने इस एकांकी द्वारा अनेक सामाजिक प्रश्नों की शृखंला सामने खड़ी कर दी है । जो भविष्य में बहुमुल्य उपयुक्त लगती है । आज भी इस प्रकार की समस्या महानगर तथा ग्रामीण भागों में ज्यादा

दिखाई देती है । बड़ा परिवार होने के कारण पढ़ाई खाना - पीना आदि का अभाव रहता है । इसी कारण घर में अनेक प्रश्न उपस्थित हो जाते हैं । यह प्रस्तुत चित्रण वर्तमान समाज का ही है ।

इसी तरह 'सीमा - रेखा' एकांकी में लक्ष्मीचंद अच्छे व्यापारी है । उनके घर में शरत, सुभाष, विजय, तारा, अन्नपूर्णा, सविता, उमा, छोटी, इतना बड़ा परिवार है । घर में कौन क्या करता हैं । इस पर नियंत्रण रखना मुश्कील हो जाता है । एक ही घर में अनेक समस्या निर्माण हो रहे है । अंत में सांप्रदायिक दंगे में विजय, शरत, छोटू की मृत्यु हो जाती है । पूरा घर बरबाद हो जाता है । लक्ष्मीचंद अपने परिवार को बचाने में असफल हो जाते हैं । एकांकीकार ने इसका चित्रण अलग पद्धति से किया है । परिवार बढ़ा होने के कारण एक विचार - आचार का पालन नहीं होता है । अनेक कलह निर्माण होते हैं । इसी कारण घर की शांति नष्ट होती है । इसलिए एकांकीकार का कहना है कि परिवार को मत बढ़ाओ ।

'डरे हुए लोग' एकांकी में विमल के परिवार में उनकी पत्नी मंजुला, श्यामली, माँ, दो बेटें तापस और इंद्र हैं । विमल की माँ और पत्नी मंजुला का घर में हर दिन झगड़ा होता रहता है । बेटा तापस से दादी आमा का झगडा हो जाता हैं । तापस विमलजी को पिता नहीं मानता है । मंजूला पड़ोसी के साथ उठती - बैठती नहीं है । हर समय घर में अशांति होती रहती है । विमलजी परिवार के नियोजन में असफल हो जाते हैं । इसी तरह 'आँचल और आँसू' एकांकी में सुपर्णा के पति की पहली पत्नी के नौ बच्चे हैं । इनका पालन-पोषण करने में पति महोदय असमर्थ होते हैं । फिर भी वे दूसरी शादी करने वाले हैं । तब सुपर्णा अपनी सहेली सुशीला से बच्चों के बारे में कहती है - "होता क्या ? हो चुका । कुछ खुश किस्मत थे । रिश्तेदारों ने आपस में बाँट लिए । एक को दूरदराज के बाबा ले गये । दूसरे को मामा, तीसरा बुआ के पास और तीन फिलहाल मैंने ले लिये सो हो गये छः ! शेष पिता के पास, अनाथालय जाने की राह देख रहे हैं । (हँसकर) और नयी जेठानी आने वाली है ।"[33]

इसका मतलब है सुपर्णा के पति को न घर की चिंता है और न ही समाज और देश की । इतने सारे बच्चें पैदा करने के बाद भी वह नई शादी करने की सोचता है । उनके बच्चों का भविष्य क्या होगा ? इस पर वे

विचार नहीं करता । इसी एकांकी में प्रोफेसर राकेश अपनी दूसरी शादी करते हैं । उनके चार बच्चे हैं । लेकिन समझदार होने के कारण खुद का परिवार नियोजन ऑपरेशन कर लेते हैं । दूसरी पत्नी की क्षमा माँगते हुये वे कहते हैं, ''ओह सुशिला ! मैं सब कुछ जानता था लेकिन मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ । मैं सोचता था कि मेरे चार बच्चें हैं । आज के युग में इनसे अधिक पालन-पोषण .... । ''[34] प्रोफेसर चार बच्चों के भविष्य की सोचते हैं । फिर भी दूसरी शादी कर लेते हैं । इसी कारण पत्नी सुशिला दु:खी रहती है । प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार यह बताना चाहते हैं कि पढ़े - लिखे आदमी भी लड़के की अपेक्षा से अनेक शादियाँ करके अनेक बच्चे पैदा कर रहे हैं । इसी कारण यह समस्या और भी गंभीर बन गयी है ।

'दूर और पास' एकांकी में की समस्या दिखाई देती है । जगन्नाथ और कलावती के परिवार में तीन बेटे अमित, अजित, अजय और बेटी उमा है । नया धंदा करने के लिये, बाप-दादा की दुकान सावकार के पास गिरवी रखते हैं । कर्ज के आधे रूपयों से चाँदी खरीदते हैं । और बाकी के रूपयों से धंदा शुरू करते हैं । धंदे में नुकसान हो जाता है । तब बच्चों के स्कूल, शिक्षा का प्रश्न उठता है । कलावती अपने पति पर नाराज होकर कहती है अपने भाई की मदद माँगो । तब वे मानते नहीं । नाराज होकर कलावती कहती है - ''न कहो तो क्या करती । तुम्हारी तरह हाथ पर हाथ धरकर बैठ जाती ? तुम्हें कुछ सोचना चाहिए । यह अपना नहीं बेटे का सवाल है । बेटे की जिंदगी का सवाल है ।''[35] कलावती को देवर की मदद लेनी पडती है । तब वे उमा की शादी, बच्चों की शिक्षा पूर्ण करती है । जगन्नाथ ने अपनी औकात देखकर बच्चों का निर्माण किया होता तो यह प्रश्न नहीं आ जाता । प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार ने वर्तमान समाज में बढ़ते हुए परिवार की हालत बता दी हैं । और इस समस्या से सतर्क रहने को कहा है ।

'कमल और कैक्टस' एकांकी में शुभा और परेश का परिवार बड़ा है । परेश मामूली नौकरी करता है । घर में चार बच्चे अजित, किरण, राजू, मनोज और बच्ची नीलम, वीणा रितु है । इन सब को संभालते - संभालते परेश थक जाता है । परिवार की संख्या दस तक बढ़ती है । बच्चों के खाने, कपडा, शिक्षा और दवा की जरूरत पूरी करने में परेश असमर्थ है । घर में मुन्नु को बुखार है । उसकी दवा के लिये पैसे नहीं है । नीलम की खाँसी बढती रही है । वीणा के हाथ में प्लास्टर चढ़ा है तो राजीव तीन हप्ते से अस्पताल में पड़ा है । घर की

छोटी उम्र की रितु घर का खर्च चलाने के लिये नौकरी करती है । अजित को अच्छे अंक मिले हैं । लेकिन फिस के पैसों के कारण इंजीनियरिंग कॉलेज जाना मुश्किल है । घर में बच्चों को समय पर खाना मिलता नहीं है । घर की हालत इतनी बिगड़ जाती है कि परेश और शुभा एक दूसरे को दोषी ठहराते हैं । जादा बच्चों के कारण घर की हालत कैसी बनती है इसका चित्रण करके हमारे लिए संदेशा दिया है कि बढ़ती हुई आबादी को रोकने का काम स्वयं आप कर सकते हैं । नहीं तो इस भूमंडल पर खाना खाने के लिए जगह मिलना मुश्किल हो जाएगी ।

इसी तरह 'डरे हुए लोग, कमल और कैक्टस, धनिया ' आदि एकांकियों में परिवार नियोजन समस्या की चर्चा कि गयी है ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन के बाद यह कहा जा सकता कि एकांकीकार ने इस गंभीर प्रश्न पर विचार विर्मश करना हमारे ऊपर छोड़ दिया है । अगले अनेक वर्षो में यह समस्या अधिक गंभीर स्वरूप धारण कर सकती है । आनेवाले कई दिनों में लोगों को न घर मिलेगा न खाना हर एक परिवार को अपने संपूर्ण परिवार की सदस्य संख्या पर लक्ष केंद्रित करना पडेगा । तब कई हमारी अबादी कम हो सकती है । साथ ही यह अबादी कम करना मनुष्य के हाथ में है । जो थोड़े से प्रयत्न से सफल हो सकता है, नहीं तो 'टूटते-परिवेश' जैसी हमारी स्थिति बन जायेगी । या 'रसोई घर में प्रजातंत्र' जैसा घर के सदस्यों का रवैया रहेगा । या 'साँकले' के विश्वनाथ जैसी हमारी स्थिति बनेगी, तो मनुष्य प्राणी न सुख से रहेगा या चैन से यह संदेश एकांकी के अध्ययन द्वारा हमें दिया है ।

3.7 अनाथों की समस्या -

स्वच्छंदीजीवन के कारण ममता प्रेम, करूणा, मानवीय जीवन से कम हो रहा है । क्षणिक सुख की इच्छा से दुष्कृत्य करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है । गैर संबंध से निर्माण हुए बालक अनाथ आश्रम में जिंदगी गुजार रहे हैं । उनकी मानसिक स्थिति क्या है ? अनाथों के प्रश्न क्या है, या नहीं । इसके बारें में एकांकी में चर्चा की है । आधुनिक युग में यह समस्या अधिक बढ रही है । इस पर विचार करना ही होगा, नहीं तो अनाथों के ऊपर

कोई ठोस उपाय नहीं निकलेंगे । ऐसा एकांकीकार का मानना है । उन्होंने निम्नलिखित एकांकियों में इस समस्या की चर्चा बहुत सुंदर करके विचार करने के लिए हमारे सामने अनेक प्रश्न उपस्थित किए हैं ।

'माँ ' एकांकी में अनाथ की समस्या आ गयी है । मनीषा की माँ विधवा है। मनीषा चार वर्ष की थी तब माँ उसे छोड़कर दूसरी शादी करती है । चार वर्ष की मनीषा अनाथ हो जाती है । पिता का प्रेम उसे मिला ही नहीं । बचपन से अनाथ आश्रम में बड़ी हो जाती है । उसकी शादी अनाथ बादल से होती है । उसकी जिंदगी में एक ही दु:ख है । माँ-बाप का प्रेम कभी मिला नहीं । पिता तो मर गये हैं, परंतु माँ ने उसे छोड दिया, इसका दु:ख उसे अधिक है ।

एक दिन अचानक माँ का पत्र आता है । माँ उसे मिलना चाहती है । उसी दिन से वह बीमार पड़ती है । अपनी सहेली मंजु को बताती है । मंजु उसे कहती है, फिर माँ से मुलाकात कर लो । तब मनीषा कहती है, " (आवेश) मैं उसे मिलना नहीं चाहती । मै उससे नफरत करती हूँ । जो अपने सुख के लिए, मुझे चार वर्ष की आयु में छोड़कर चली गयी । जिसने मुझे माँ के सुख से वंचित किया, जिसने मुझे अभाव और अपमान में तडपने को विवश किया । वही मेरी माँ होने का दावा कैसे कर सकती है ?" [36] मनीषा का कहना सही है क्योंकि माँ को उसके प्रति प्रेम होता तो अनाथ आश्रम में न छोड़ देती ?

एकांकीकार ने मनीषा के अंतर्मन में जाकर उसकी व्यथा का गहरा चित्रण किया है, मनीषा के दृष्टि से उसकी माँ के विरूद्ध क्रोध ठीक ही है । बचपन में मनीषा ने कितना दु:ख भोगा होगा कितना अपमान, गालियाँ उसे सुनने पड़ी होगी । इसका अंदाजा सिर्फ वही व्यक्ति कर सकती है, जिसने यह दु:ख भोगा है । अंत में हम इतना कह सकते हैं कि अनाथों को आज भी समाज में सम्मान नहीं मिल रहा है ।

'मीना कहाँ है ?' एकांकी में नरेश अविवाहित है । जिंदगी के बचे हुये दिन गुजारने के लिये अनाथ आश्रम से मीना को उठा लाते हैं । मीना को अपनी बच्ची की तरह प्यार करते हैं । उसकी अच्छी परवरीश करता है । एक दिन पड़ोसी के सीता के खिलौने देखकर, उसी तरह के खिलौने की जिद्द करती है । नरेश बहुत समझाते हैं, लेकिन मीना सुनती नहीं । क्रोध में नरेश मीना को इतना मारते हैं, कि वह अंत में मर जाती है ।

क्या नरेश की सगी बेटी होती तो वे मारते ? की उसमें वह मर जाये । मीना अनाथ बच्ची थी । अनाथ का कोई अपना नहीं है । आज समाज में यही चित्र अधिक दिखाई देता है । जो व्यक्ति समाज में खुद की किंमत बढ़ाने के लिए आश्रम से बेटी उठा लाते हैं, या आश्रम के युवतियों के साथ शादी कर देते है, लेकिन अंत में वे वहीं करते है जो सामान्य आदमी कर लेता हैं । इस तरह काम करने से इस समस्या का हल नहीं निकल पाता है, बल्कि और ज्यादा बढ जाता है । एकांकीकार ने इस एकांकी द्वारा यह बताया है कि हम जिस दृष्टि से अनाथ व्यक्ति को देखते हैं यह बदलनी चाहिए । अनाथ बच्चों को अपने घर में है तो उसके साथ अच्छा बर्ताव करना चाहिए । नहीं तो वे आश्रम में ही ठीक है ।

'समंदर' एकांकी में मन्नू भी अनाथ है । शांतिनिकेतन आश्रम के प्रमुख मुन्नवर आप्पा को फुटपाथ पर मिला है । उसके माँ-बाप का पता नहीं । इसी कारण उसका नाम मन्नू रखा है । मन्नू का मतलब है आदि पुरूष । मन्नू आश्रम में रहनेवाली हिंदू विधवा सुमिता से प्रेम करता है । परंतु सुमिता अकबर से शारीरिक संबंध रखती है । तब मन्नू आश्रम छोड़कर चला जाता है । इस चित्रण द्वारा एकांकीकार ने अनाथ के अधिकार का प्रश्न उपस्थित किया है । भारतीय समाज में अनाथ बच्चों को कोई स्थान नहीं है । यह इस चित्रण द्वारा हमें मालूम हो जाता है ।

मन्नू का कोई होता तो शादी के लिए विधवा का चुनाव क्यों करता ? अंत में मन्नू अनाथ बच्चों की देखभाल में ही जिंदगी गुजारता है । इसी एकांकी में अकबर भी पाकिस्तान बँटवारे के समय मिला है । तब से वह अनाथ आश्रम में रहता है । आश्रम में कीर्ति और उसकी माँ अजित कौर भी रहते हैं । कौर परिवार सिख्ख है । कीर्ति बलात्कार पीड़ित है । जब कीर्ति की शादी का प्रश्न निर्माण होता है, तब आश्रम के प्रमुख उसकी शादी अकबर से करने का निणर्य लेते हैं । अकबर भी शादी के लिए तैयार हो जाता है । अकबर अनाथ है इसी कारण बलात्कार पीड़ित कीर्ति को स्वीकारता है । तब प्रश्न अपने आप आता है क्या अनाथ की यही कीमत होती है ? समाज से पीड़ित दु:खी को अपनाने का ठेका सिर्फ अनाथों का है ? कई प्रश्न अपने आप उठते हैं जिसका कोई जवाब नहीं है । परंतु अनाथ संतान को भी मन है । उसे भी अच्छी पढ़ी - लिखी लड़की के साथ शादी करनी है । इसे हमारा समाज भूल गया है ।

'उपचेतना का छल' एकांकी में इसकी चर्चा की गयी है । शंकर की दूसरी पत्नी मर जाती है । उसका बच्चा अनाथ हो जाता है । शंकर बच्चों को उठाकर रास्ते पर रख देता है । पुलिस बच्चे को उठाकर थाने में ले जाती है । जब शंकर की पहली पत्नी तारा को यह बात समझती है तब पुलिस थाने से बच्चा अपने घर लाती है । इसमें उस बच्चे का क्या दोष जो बाप होकर भी अनाथ होकर रास्ते पर पड़े । परंतु आज वर्तमान समाज में इस तरह की प्रवृत्ति अधिक बढ़ रही है । पत्नी की मृत्यु के बाद अपनी औलाद को आश्रम में छोड़कर दूसरी शादी करने के लिए अपनी ही औलाद को अनाथ आश्रम में रखा जा रहा है । इसी तरह 'आँचल और आँसू' एकांकी में अनाथों की समस्या आ गयी है । प्रोफेसर राकेश की पहली पत्नी मर जाती है । दो बच्चे इल्ला और उल्लास अनाथ हो जाते हैं । प्रोफेसर दूसरी शादी सुशीला नामक युवती के साथ कर देते हैं । सुशीला को यह बात मालूम होती है कि प्रोफेसर साहब ने खुद का परिवार नियोजन ऑपरेशन करवाया है । तब से बच्चों को मारना शुरू करती है । उल्लास को खूब मारपीट करती रहती है । इल्ला बेटी अपने छोटे भाई से कहती है - "अच्छा भाई, अच्छा ! तू तो बहुत जिद्दी है । (धीरे से कान में) परंतू जानता नहीं, यह हमारी असली मम्मी नहीं है ।" [37]

असल में प्रोफेसर दूसरी शादी इसलिए करते है कि बच्चों को माँ का प्यार मिले लेकिन प्यार मिलता ही नहीं । बच्चे बिना माँ के अनाथ रह जाते हैं । छोटी इल्ला को इस बात का अहसास अधिक होता है । कभी - कभी आदमी अपने स्वार्थ के कारण शादी करके स्वयं के बच्चों को अनाथ बनाता है । इसका चित्रण अलग पद्धति से किया है ।

इसी एकांकी में सुपर्णा के पति पहले शादी शुदा है । उनके नौ बच्चे हैं । इस अनाथ बच्चे की परवरिश सुवर्णा करती है । जब पति उसे तलाक देते हैं तब इन बच्चों की दुर्दशा हो जाती है । एक बच्चे को दूरदराज के बाबा साथ लेकर जाते हैं । दूसरे बच्चे को उसका मामा लेकर जाता है तीसरे बच्चे को बुआ के पास छोड दिया जाता है । तीन बच्चे सुपर्णा खुद लेकर चली जाती है । बाकी बच्चे पति के पास से अनाथालय में भरती कराये जाते हैं । इसी तरह बच्चे अनाथ हो जाते हैं ।

'डरे हुए लोग' एकांकी में इसकी चर्चा की गयी है । मंजुला की शादी में पहले प्रेमी का बच्चा तापस है । वह अपने मौसा के यहाँ रहता है । जब माँ मंजुला के पास रहने आता है, तब पिता विमल से बार - बार झगडा करता है, क्योंकि स्कूल में बच्चे उसे चिढ़ाते हैं, कि विमल उसका असली बाप नहीं है । तापस को कानूनी बाप मिलने पर भी तापस अनाथ ही रहता है । इस पीड़ा के कारण स्कूल में हर विषय में वह फेल हो जाता है । उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है । यहाँ समाज को दोष देना है ? या उसकी माँ मंजुला को या पिता को जिसने उसे स्वीकार किया है । इतना सब होने के बाद तापस कहता है पप्पा सच्चा प्यार उसे नहीं करते हैं, उनके प्यार में बनावट जादा है । पप्पा का ऊपरी प्यार वह समझता है, और अंत में वह पहले जैसा अपनी मौसा के यहाँ रहने चला जाता है । एकांकीकार ने इस समस्या की चर्चा अनेक एकांकियों में कि है, उनका दृष्टीकोन यह है, की अनाथ लोगों की पीड़ा लोगों तक पहुँचाना ।

उपर्युक्त विवेचन के बाद यह कहा जा सकता है कि यह समस्या समाज में अधिक दिखाई दे रही है । मानव क्षणिक सुख के पीछे लग जाता है । विवाह बाह्य लैंगिक संबंध से या स्वच्छंद प्रवृत्ति के कारण स्त्री-पुरूष संबंध द्वारा ऐसी संतान निर्माण हो रही है । कुमारी माता का प्रमाण बढ़ रहा है । और निर्माण बालक को आज अनाथ आश्रम में छोड़ दिया जा रहा है ।

सभी को एकांकीकार ने इन एकांकियों द्वारा यह संदेशा दिया है, कि मानवी भावनाओं के उद्रेक पर काबू पाना ही मानवता है । विवाह बाह्य संबंध द्वारा बालक को निर्माण करके मानवी जीवन से खिलवाड़ करना योग्य नहीं है, साथ ही इस मार्ग पर चलते समय दूसरों के मार्ग में बाधा बनना भी अयोग्य है ।

3.8 अनमेल विवाह की समस्या -

गरीबी के कारण दहेज न देने की स्थिति से परिवार का प्रमुख अपनी बेटी या घर की नवयुवतियों का विवाह उससे अधिक उम्र के आदमी से करा देते हैं । कभी - कभी दो - तीन शादियाँ हो चुके बूढ़े से भी बेटी

का विवाह कर देते हैं । घर की आर्थिक स्थिति इसका कारण होती है । यह समस्या आज निम्न वर्ग में अधिक दिखाई देती । एकांकीकार ने निम्नलिखीत एकांकियों में इसकी चर्चा की है ।

'आँचल और आँसू' एकांकी में प्रोफेसर राकेश पैतालिस वर्ष के है । उनकी पत्नी मर चुकी है । दो बच्चें इल्ला और उल्लास हैं । उन्होंने परिवार नियोजन का ऑपरेशन भी करवाया है । फिर भी वह सुशीला नाम केबाईस वर्ष की गरीब नवयुवती से विवाह करते हैं । यह विवाह भी क्या ? बच्चों की परवरिश ओर स्वयं की शारीरिक आवश्यकता पूर्ण करने के लिए सुशीला जैसी गरीब लड़की से शादी करते हैं । जब सुशीला को डाक्टर द्वारा ऑपरेशन की कहानी मालूम होती है तो वह तलाक देने के लिये तैयार हो जाती है । और राकेश के बच्चों को पीटना शुरू करती है ।

सुशीला की स्वयं के बच्चों की इच्छा अधूरी रहती है । वह बार - बार अपने आपको और प्रोफेसर को तंग करती है । राकेश के साथ झगड़ा करते समय उसका दुःख खोलती हुई वह कहती है - "मैं एक गरीब की बेटी थी । मेरा सधवा हो जाना तुमने जरूरी समझा । जैसे कभी कंगाल में कुलीन परिवार की गरीब लड़कियों के विवाह किसी कुलीन मुर्दे से कर दिये जाते थे । जिससे कि वे एक बार माँग में सिंदुर भरकर कुँवारापन मिटा सके, माँ-बाप को कन्यादान का पुण्य दे सके । फिर चाहे जन्मभर विधवा रहकर तड़पती रहे । मुझसे तो वे भी अच्छी थी, क्योंकि वे विधवा तो होती थी, पर मैं तो सधवा होकर भी ..." [38]

सुशीला अपने विवाह को बंगाल में गरीब लडकियों का विवाह मुर्दे के साथ कराया जाना ऐसा समझती है, क्योंकि वह इस शादी से संतुष्ट नहीं है । यहाँ दोनों का विवाह अनमेल है ।

सुशीला जीवन के अंत तक इस विवाह से खुश नहीं है । उनके विवाह के बारे में विचार है कि पति - पत्नी को सुख दें । परंतु सुशीला की काम इच्छा अतृप्त रहती है, साथ ही संतान का सुख उसे नहीं मिलता है।

इस एकांकी में सुपर्णा नवयुवती है । उसका विवाह उस व्यक्ति से हुआ है जिसके पहली पत्नी के नौ बच्चे हैं । सुपर्णा अपने विवाह का अनुभव सहेली सुशीला से कहती है - "अरी कैसा प्रेम और कैसा साहस । गीदड़ गिर पड़ा झेरे में, वही विश्राम सही ।" [39] अपने विवाह की स्थिति कैसी है यह सुपर्णा बताती है । अधिकतर समाज में ऐसे विवाह जादा दिन नहीं चलते हैं । इसी कारण संसार में अनेक प्रश्न निर्माण हो रहे हैं ।

'समरेखा-विषमरेखा' एकांकी में बैरिस्टर केशव अपने से कम उम्र की रेखा के साथ शादी करते हैं । उसे खुश करने के लिए हर दिन नई-नई साडियाँ, गहने देते रहते हैं । रेखा का पहला प्रेमी रंजन चित्रकार है । वह घर आने के लिए पत्र द्वारा अनुमति माँगता है । केशव अनुमति दे देते हैं । जब से केशव घर आता है, रेखा उसके साथ बाहर जाने लगती हैं । घर में झगडें शुरू होते हैं । बैरिस्टर केशव घर छोड़कर चले जाते हैं । लेकिन रंजन रेखा के साथ घर पर ही रहता है । केशव पाँच दिन के बाद बारिश में अपने घर आते हैं ।

केशवजी को अपनी उम्र का अहसास हो जाता है । और समय के साथ वह समझौता करते हैं । याने विवाह करते समय उम्र तथा अपनी शारीरिक स्थिति को ध्यान रखकर विवाह करना जरूरी है यह एकांकीकार सूचित करना चाहतें हैं । क्योंकि बैरिस्टर केशव जैसे विद्वान की शादी की स्थिति क्या हो जाती है, यह दिखाया है । प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार को कहना है कि आयु में अंतर होने कारण पति - पत्नी में भावनिक अंतर निर्माण हो रहा है । और यह अंतर तलाक तक पहुँच गया है । कभी - कभी रेखा जैसी युवतियाँ रुपयों के लालच में ऐसे विवाह को सहमती दे रही है । यह समाज के लिए घातक है ।

इसी तरह 'उपचेतना का छल' एकांकी में शंकर और तारा का विवाह इस प्रकार का है । शंकर की पहली दो शादियाँ हो चुकी हैं । वह तारा नामक नवयुवती से शादी करता है । तारा उसकी बेटी के उम्र की है । दोनों जादा दिन साथ नहीं रहते हैं । तारा खुद शंकर को तलाक देती है । और प्रभात नाम के युवक से संबंध जोड़ती है । शंकर उसे बार-बार बिनंती करता है कि तलाक मत दो लेकिन तारा अपने संबंध को तोड़ देती है । तारा को भी प्रभात छोड़ देता है । तब प्रभात की आयु उसके ध्यान में आ जाती है ।

तारा और प्रभात का संबंध भी अनमेल ही कहा जाता है । शंकर तारा को सारी खुशियाँ देने से असमर्थ है । इसलिए तारा खुद शंकर से तलाक लेती है और समाज के सामने अपना आदर्श स्थापित करने के लिए शंकर का चौथा विवाह खुद कर देती है । लेकिन ऐसा करने में उसका स्वयं का स्वार्थ दिखाई देता है । वह दूसरे नवयुवक को फँसाना चाहती है लेकिन दुर्भाग्य से प्रभात उसे छोड़ देता है । मतलब एक शादी गलत साबित के बाद दूसरी मनचाही करने के लिए वह शंकर को छोड़ देती है लेकिन अंत में उसे स्वयं के उम्र के कारण अपयश मिलता है ।

उपर्युक्त एकांकियों के विवेचन द्वारा यह कहा जा सकता है कि अनमेल विवाह की समस्या गरीबी के कारण ही निर्माण हो रही है । उसके साथ स्वयं का स्वार्थ भी और एक कारण है। एकांकीकार ने इस समस्या को समाज के निम्न वर्ग में जादा देखा है । लेकिन उच्च वर्ग में भी यह समस्या कम नहीं है । रूपयों के लालच के कारण अनेक लड़कियाँ पिता के उम्र जैसे आदमी से विवाह कर रही है । इसलिए यह समस्या निर्माण होने में मानवी स्वार्थ भावना ही जिम्मेदार है ।

3.9 अवैध संतान की समस्या -

प्राचीन काल से विवाह बंधन को समाज ने मान्यता दी है । परंतु समाज ने विवाह बाह्य संबंध और संबंध से उत्पन्न संतान को मान्य नहीं किया है । कुंती पुत्र को भी स्वीकारा नहीं है । आज आधुनिक समाज में यह समस्या अधिक दिखाई देती है । विवाह बाह्य संबंध से उत्पन्न बेटा या बेटी को समाज बहिष्कृत करता है, उसके साथ अच्छे व्यवहार नहीं करता है । तब ऐसे संतानों की मानसिक स्थिति क्या होती होगी ? इसकी चर्चा एकांकीकार ने निम्लिखित एकांकियों में की है ।

'डरे हुए लोग' एकांकी में मंजूला का बड़ा बेटा तापस है । तापस विवाह पूर्व का बेटा है । मंजूला का पति विमल उसे स्वीकार करता है, क्योंकि वह मंजूला से बेहद प्यार करता है । लेकिन मंजूला की सास तापस को स्वीकार नहीं करती । समाज के लोग, स्कूल के बच्चे और खासकर जनार्दन मास्तर तापस को उसके

असली बाप के बारे में प्रश्न पुछकर तंग करते रहते है । इस कारण तापस मानसिक रोगी बनता है । स्कूल में उसे प्रत्येक विषय में कम गुण मिलते है । स्कूल को आते-जाते समय सारे बच्चे चीढ़ाते है । हर समय रोते-रोते घर आता है, तब मंजू से उसका छोटा बच्चा इंद्र बताता है - " मम्मी वे तो रोज ही बुरी-बुरी बाते कहते हैं । आज कहते थे, तापस दादा के पप्पा का कुछ पता नहीं हैं । तापस की मम्मी ने बुरा काम किया है ।" [40]

अनपढ़ और पढ़े-लिखे समाज में भी तापस जैसे अनेक बच्चों की मानसिक अवस्था दुविधापूर्ण होती है । मंजूला के बहन के पास रहनेवाला तापस बहुत सुंदर और होशियार था । लेकिन माँ के यहाँ आकर मानसिक रोगी बन जाता है । एक दिन किसी को कहे बिना घर छोड़कर चला जाता है । समाज उसे स्वीकार नहीं करता है । तापस को कानून के जरीय विमल जैसा पिता मिलने पर भी यह समाज उसे अपमानित कराता रहता है । तब एकांकीकार इस समाज को प्रश्न करते हैं । क्या अवैध बच्चा बनकर जन्म लेना उसके हाथ में था ? इसमें तो तापस का क्या दोष है ? फिर भी सजा उसको ही भुगतनी क्यों पड़ रही है ? एकांकीकार ने इस चित्रण द्वारा तापस जैसे अनेक अवैध संतान का दुःख हमारे सामने लाने का प्रयत्न किया है साथ ही इस गंभीर समस्या पर वैचारिक मंच स्थापित करने का वे आग्रह कर रहे हैं । भविष्य में ऐसे बच्चों के साथ अच्छा बर्ताव करना समाज के ही हीत में है ।

'समंदर' एकांकीका में शांतिनिकेतन आश्रम के मुन्नवर आप्पा को सुबह फुटपाथ पर बालक मिलता है । उसे लेकर आश्रम आते है । आप्पा को लगता है कि बालक किस के चोरी-छुपे प्रेम की निशानी है । इसी कारण बालक का नाम 'मनु' रखते है । मन्नु का अर्थ आदिमानव है । मन्नु सुमिता से प्रेम करता है । जो हिंदू विधवा है । जब वह प्रेम में असफल होता है । तब चेंबर से छुटे वायु के कारण बनाए दुःखी पीडितों की सेवा करने चला जाता है । इसी एकांकीका में अकबर भी अवैध संतान है । जिसे अपनी जात, गोत्र, वंश का पता नहीं है । उसे बलात्कार से पीड़ित कीर्ति को अपनाना पड़ता है । क्या ऐसी संतान को समाज अच्छी सुसंस्कारीत लड़की से शादी करने देगा ? या समाज के ठुकराए गए व्यक्ति पर ही समाधान मानना पड़ेगा ? ऐसे कई सवाल एकांकीकार ने उठाए हैं । आज भी भारतीय समाज में अवैध संतान को मूल्य नहीं मिल रहा है । उनके दुःख को

किसी ने देखा नहीं है । अपमानित पीड़ित जीवन आज तक मिल रहा है । इसलिए भविष्य में यही संतान गुन्हेगार बनने की जादा संभावना दिखाई देती है ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन के बाद यह कहा जा सकता है कि अवैध संतान की निर्मीति मानवी विवाह बाह्य यौन संबंध ओर असफल प्रेम की निशानी है । इस समस्या को कम करने के लिए अपनी भावना पर काबू पाना चाहिए । ऐसी संतान से अच्छा बर्ताव करना चाहिए । नहीं तो वे मानसिक रोगी बन जाऐंगे ।

3.10 फैशन की समस्या -

आज कल फैशन का जमाना आ गया है । रहन-सहन, कपडे इसमें भी फैशन आ गई हैं । फैशन की तरह रिश्ते - नाते बदल रहे है । यह गंभीर बात है । पति-पत्नी फैशन में अपना समय बरबाद कर रहे हैं । फैशन की दूनिया हमें प्रेम, करूणा, ममता से दूर ले जा रही हैं ।

'लिपस्टिक की मुस्कान' एकांकी में रीता शादीशुदा औरत है । वह माँडेलिंग करती है । घर में रहती है, तब बिना मेकअप से बात नहीं करती । फैशन करना आवश्यक बात है । हर बात में फैशन का नयापन होना चाहीए ऐसा वह मानती है । उसके पति राकेश और बेटा घर में रहते हैं । लेकिन उसके साथ प्रेम से बैठना तो दूर, बात भी नहीं करती । जब बच्चा प्यार से उसके पास जाता है । तब बच्चे को संभालनेवाली आया को कहती है - "(चीखकर) चली जाओ ! ले जाओ बेबी को ! इतनी देर से खड़ी-खड़ी क्या कर रही है । ले जा इसको, मुझे ड्रेस बदलनी पड़ेगी, इंटरव्यू के लिए जाना है, और कमबख्त बेबी ने सारा मुड़ बिगाड़ दिया । उसे इतना सिर चढाया है कि हमेशा पल्ले से बँधा फिरता है ।" [41]

फैशन के कारण अपने बच्चे को रीता गालियाँ देती हैं । तब पति उसे रोकते हुए कहते है कि उनसे क्या किया ? वह अपने पति से कहती है - "क्या कर दिया ? सारी ड्रेस खराब कर दी । आज मेकअप

पर सचित्र भाषण था । आया, इतना भी नहीं समझती कि बेबी को किस वक्त मेरे पास लाना चाहिए । इस वक्त उसे छोड़ दिया और वह आकर मुझसे चिपक गया ।'' [42] फैशन के कारण हम अपने संतान को प्रेम से वंचित रख रहे हैं। इसी कारण आगे चलकर यही हमारे बच्चे भविष्य में हमें क्या प्रेम देंगे ? यह प्रश्न एकांकीकार ने हमारे सामने रखा है ।

रीता कुमार युवकों के क्लब में जाना फैशन समझती है । राकेश से कहती हैकि आजकल ये फैशन बन गई है । एक दिन राकेश को सर्दी जुकाम होता है तब अस्पताल फोन करके ॲम्बुलन्स बुलाती है । साथ में घर को डिस्इनफैक्ट करने के लिए कहती है । ऊपर कहती है कि पाश्चात्य देश में यह सब करते है । हम क्यों नहीं कर सकते ?

रीता पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव है । हर बात में दिखावा, फैशन को वह जरूरी समझती है । इस फैशन के कारण वह कभी अपनी बच्चे को सच्चा प्यार देना भूल जाती है । माँ तो प्रेम की मूरत होती है, लेकिन रीता सब भूल गई है । पति को भी वह मन से नहीं चाहती है । परिणाम यह हो जाता है कि पती उसे छोड़ देता है और पश्चाताप करना पड़ता है । वर्तमान समाज में अधिकतर शहरों में ऐसा चित्र दिखाई दे रहा है ।

इसी तरह 'टूटते-परिवेश' एकांकी में दीप्ति पाश्चात्य संस्कृति की तरह फैशन करती है । हिप्पियों की तरह ड्रेस पहन लेती है । सिगरेट पीती है । अनेक युवकों के साथ दोस्ती करती है । उसके युवक सिर्फ दोस्त है । नाटक की रिहर्सल के बहाने रात भर घर के बाहर रहती है । नाचना, गाना और घूमना यही मस्ती भरी जिंदगी का मतलब समझती है । जब छोटा भाई उसे रोकना चाहता है तब उसे कहती है कि यह सब फैशन हैं और उसे करना जरूरी है । उसकी बड़ी बहन मनीषा तो रात घर ही नहीं आती । दीवाली के दिन घर में रहने के बजाय, दोस्तों के साथ दीवाली नाइट मनाने जाती है । प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार यह कहना चाहते हैं कि आज कल फैशन के नाम पर नवयुवतियाँ भी काम पीड़ित हो गई है । हर घर में इस समस्या ने अनेक प्रश्न निर्माण कर दिए हैं । वे कहते हैं, फैशन ने भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्य को पाँव तले कुचला दिया है ।

'मर्सीडीज और ढोलक' एकांकी में इसकी चर्चा है । श्रीमती चावला परदेस में रहती है । छुट्टियाँ मनाने भारत में आई है । वह भारतीय बनने की फैशन करती है । असल में यह दिखाने के लिए वह घर में मणिपूरी नृत्य - मुद्रा, रामेश्वरी से लाये शंख, सीपियाँ घर में रखती है । सुशील वर्मा और शर्मा नामक कहानीकार और नाटककार को बुलाकर दिखाती है । दोनों को कहती है कि घरेलु पार्टी है । ढोलक पर गाना होगा । मगर उनके सारे दोस्त माथुर, मृदुला, गुप्ता, थापर आते है । जो नाच - गाना, शराब में ही एक दूसरे के साथ रात गुजारते है । खन्ना की मर्सीडीज कार देखने सब चले जाते है । लेकिन ढोलक का गाना कोई सुनता नहीं है । तब कहानीकार और नाटककार के ध्यान में दिखावा आ जाता हैं ।

मृदुला पार्टी में आती है तब श्रीमती चावला उसके फैशन का वर्णन करती शर्माजी कहती है - ''शर्माजी आप मृदुला को अभी जानते नहीं है । लेटेस्ट फैशन इन्ही से प्रारंभ होती है । अभी देखो, जुड़े में चाँदी के फुल और घुंघरू टँके है । गले का हार भी चांदी का है ।''[43] तब व्यंग्य से सुशील कहता है - मैंने देख लिया है, बहुत खूशी हुई । कितनी तेजी से अब हम भारतीय होने जा रहे है ।

इसका मतलब पाश्चात्य देश में रहकर भारतीय रहन सहन वे भूल गए है । और भारत आने के बाद फैशन के जरीए भारतीय बनना चाहते है एकांकीकार ने ऐसे व्यक्ति के लिए संदेशा दिया है कि आप दिल से हिंदुस्थानी है तो विश्व के किसी भी कोने में जाए तो भी आप हिंदुस्थानी ही रहेंगे, इसके लिए फैशन करने की कोई जरूरत नहीं हैं।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन के बाद कहाँ जा सकता है कि फैशन द्वारा आप शरीर को सुंदर बना सकते है । आत्मा को नहीं, आत्मा के विचार अच्छे हो तो फैशन करने की जरूरत ही नहीं है । इसलिए इस समस्या को समाज से निकालने की कोशिश करनी चाहिए । जब तक हम फैशन का विरोध नहीं करेंगे तब तक फैशन के नाम पर अनेक प्रश्न निर्माण होते रहेंगे ।

स्वच्छंद जीवन की समस्या -

महात्मा गांधीजी ने देहातों में चलों ऐसा कहा था लेकिन आज तक लोग गाँव से शहर की ओर चल रहे हैं । वे रंगीन दुनियाँ में रिश्ते नाते सब भूल गए हैं। वहाँ मर्यादा के बंधन ढिले हो गए हैं। और चाह लगी है , मुक्त जीवन की, स्वच्छंदी जीवन की । पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण आज यह समस्या गंभीर बन गई है । इसलिए भावनात्मक एकांकीकार ने इसका विरोध किया है ।

'साँकले' एकांकी में दीपक शहर में डाक्टर है । वह अपने माता-पिता को मिलने गाँव जाता है । मंगेतर विनिता को भी ले साथ में ले आया है । गाँव में दीपक का मित्र परेश उनके घर आया है । परेश सैनिक है जब परेश और विनिता की मुलाखात होती है तब दोनों घुमने घर से निकलते हैं । विनिता परेश को देखकर दीपक के साथ शादी का फैसला बदल देती है । वह परेश को कहती है - ''उधर नहीं उधर शोर है, मैं एकांत चाहती हूँ ।'' [44] परेश को वह कहती है, मैं आझाद हूँ, मैं अपना निर्णय बदल सकती हूँ । दीपक की माँ को यह बात मालूम होती है । दीपक भी शादी के बारे में विचार बदल देता है । वह भी माँ से कहता है, ''और क्या ? न सही विनिता, सुनीता, होगी लीना या ऐनी होगी । वाजिदा या सोनिया, तमारा भी हो सकती है । पर एक बात है, होगी लड़की ही ।'' [45] आज कल व्यक्ति किसी एक के बंधन में रहना नहीं चाहता है । विनिता की तरह वह स्वच्छंदी रहना चाहता है । समय आने पर जिस तरह वह दीपक को बदलती है, उसी तरह वह अपने आपको बदलती रहती है । दीपक भी स्वच्छंदवादी है । दोनों के इस प्रवृत्ति के कारण दोनों एक दूसरे से दूर जाते है । दीपक का भाई अजित भी स्वच्छंदवादी है । वह किसी को बिना पुछे घर छोड़कर चला जाता है ।

प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार कहना चाहते हैं, शहर में पढ़े लड़के -लड़कियाँ स्वच्छंद जीवन जीना चाहते है । प्रेम के नाम पर वह किसी अनोखे व्यक्ति के साथ संबंध जोड़ते भी है और तोड़ते भी है । वे अपनी माता-पिता की एक नहीं सुनते और अंत में ऐसे बच्चे जिंदगी से निराश हो जाते हैं ।

इसी तरह 'लिपस्टिक की मुस्कान' एकांकीका में भी यह समस्या आ गई है । रीता पाश्चात्य विचारों से प्रभावित है । पति राकेश पर हर समय रोब जमाती है । नवयुवकों के क्लब में जाने के लिए राकेश को

बिना पुछे चली जाती है । नाच - गाना, पार्टी इस कारण राकेश उसे रोकता है । तब दोनों में झगड़ा हो जाता है । उस समय वह राकेश से कहती है, ''शटअप, मुझसे बहस करते हो, चीटी के पर निकले नहीं हैं । मैं कहती हूँ, तुम्हारा बर्ताव डिक्टेटरशिप का है, डेमोक्रेसी का नहीं । मैं स्वतंत्र हूँ, मैं तुम्हारे ऑर्डर नहीं मानुंगी मै ....।'' [46]

रीता न पति राकेश का आदेश मानती है और न उसे समाज का भय है । हर समय वह अपने आप को स्वतंत्र मानती है । इस कारण वर्तमान परिस्थिति में शादी के बंधन में स्त्री - पुरूष जादा दिन इकट्टे नहीं रहे हैं । परिणाम तलाक जैसी समस्या निर्माण हो रही है । एकांकीकार ने शहर में रहनेवाले परिवार का चित्रण किया है । वर्तमान परिस्थिति में शादीशुदा औरतें रीता जैसा बर्ताव कर रही है । इसी कारण पति - पत्नी में संदेह का वातावरण बढ़ रहा हैं ।

'कापुरूष' एकांकी में सुरेखा भी स्वच्छंदी है । माधव के साथ प्रेम का नाटक करती है । लेकिन शादी नहीं करती । वह शादी ऐसे व्यक्ति से करना चाहती है । जो शादी से 'सोशल कॉन्ट्रॅक्ट' समझे । वह माधव का स्वभाव देखकर उसे छोड़ देती है । वह ऐसा पति चाहती है कि वह कुछ न कहे । समय का उपयोग करनेवाली सुरेखा माधव को छोड़कर अनेक पुरूषों से संबंध जोड़ती है, और छोड़ती भी है । उसके चित्रण द्वारा एकांकीकार ने पढ़े - लिखे लड़कियों में बढ़ती स्वच्छदी प्रवृत्ति का दर्शन कराया है।

इसी एकांकी में अविनाश स्वच्छंदी है । वह एक ही लड़की से प्रेम नहीं करता है । अपने आपको आजाद समझता है । मंजू उससे बेहद प्यार करती है । जब वह उसे छोड़कर चला जाता है, तब वह बताती है - ''वही जो अक्सर युवतियों के साथ हुआ करता है । उसे मुझसे अच्छी लड़की मिल गई । और इसलिए जब मैने उससे विवाह का प्रस्ताव किया । तो पहले टालता रहा फिर एक दिन स्पष्ट इंकार कर दिया । कहा, वह विवाह में विश्वास नहीं करता । और अगर उसे करना ही पड़ा तो वह किसी और लड़की से करेगा । मुझसे वह सदा प्रेम ही करता रहेगा ।'' [47]

अविनाश किसी भी लड़की से शादी करना नहीं चाहता है । उसकी जिंदगी में आनेवाली हर लड़की से पहले प्रेम ओर उपभोग कर के छोड़ देता है । इसी तरह 'कुपे' एकांकी में स्वच्छंद जीवन की समस्या आ गई है । सर्वजीत स्वच्छंदी है। वह हिप्पियों और जिप्सिओं के टोली में घुमता है । कभी मार्या के साथ संबंध रखता है । कभी तो जुड़िस के साथ तो सांत्वना के साथ संबंध जोडता है । ओर तोड भी देता है । एकांकी के सभी पात्र स्वच्छंदवादी है । जो अपने आपकी स्वतंत्रता के लिए देश - वेष छोड़कर भटकते रहते है । मन शांति की खोज में घातक स्वच्छंदवादी बनता है । सांत्वना इन सभी लोगों के स्वच्छंद जीवन का विश्लेषण करती हुई कहती है - ''जितने लोगों से मैंने बात की है, वे सभी इन अनुभवो से गुजर चुके थे । सैक्स, नशा सब कुछ उनके लिए सहज है । फिर भी वे भटक रहे हैं । कितनी सच्ची है उनकी यह भटकन । कुछ है जो परिवार के शासन से परेशान है । कुछ को आज की शोषण की राजनीति त्रस्त करती है । वे औद्योगीकरण से प्राप्त ऐश्वर्य और विलास से ऊब चूके हैं । यह यांत्रिक और कृत्रिम जीवन उनको खोखला कर रहा है । और वे उस आनंद की तलाश में है ।'' [48] प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार ने इस समस्या का गंभीर स्वरूप स्पष्ट किया है । किसी न किसी कारण मनुष्य स्वतंत्र होना चाहता है, लेकिन अंत तक उसे मन शांति कहा मिलती है ।

'टुटते परिवेश' एकांकी में विश्वजीत की दो बेटियाँ स्वच्छंदी है । दोनों रातभर घर से बाहर रहती है । दीप्ति हिप्पियों की वेशभूषा करके, सिगरेट पीती है । नाटक के बहाने युवकों के साथ नाच-गाने में मशगुल रहती है । मनीषा भी उसकी बहन की तरह है । विश्वजीत का बेटा उन्हें विरोध करता है । तब मनीषा कहती है - ''कोई नहीं है, मैं जा सकती हूँ । आप पूँछ सकते है, मैं कौन हूँ ? कहाँ जा रही हूँ ? यही तो इस घर में समस्या है । यही तो आप जानना चाहते है । मैं पूँछती हूँ कि मै क्या आपको इतनी नादान दिखाई देती हूँ कि अपना भला-बुरा न सोच सकूँ । अपनी इच्छा से आ-जा न सकूँ, जो ठीक समझूँ वह न कर सकूँ ? जी नहीं , मैं अपना मार्ग आपको चूनने का अधिकार नहीं दे सकती । कभी नहीं दे सकती । मैं जा रही हूँ, वही जहाँ मै चाहती हूँ ।'' [49]

घर में पिता विश्वजीत उनके आने जाने में अनदेखी करते है तब वह कहती है कि इस घर में पूँछने वाला कोई नहीं । लेकिन जब भाई पाबंदी लगा देता है, तब कहती है मैं नादान नहीं हूँ । अपना मार्ग चुनने

का अधिकार है । अंत वह स्वयं का मार्ग चुनती हैं । माँ - बाप को कोई अधिकार ही नहीं देती । प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार यह कहना चाहते हैं कि शहर में इस तरह का वातावरण अधिक बढ़ रहा है । जब तक माँ - बाप संतान पर अच्छे संस्कार नहीं करेंगे तब तक यह समस्या बढ़ती ही रहेगी ।

'पिकनिक' एकांकीका में आधुनिक, अति स्वतंत्रता प्रेमी, कॉलेज की लड़कियों का चित्रण हुआ है । विवाह संसार तथा सामाजिकता की दृष्टि से युवक युवतियों की स्वच्छंदता घातक सिद्ध हो रही है । उनके बढ़ते हुए कदमों को रोकना कठिन होता है । कॉलेज युवती निरूपमा सोचती है कि माँ को अपने जवानी में युवकों के साथ उठने-बैठने, हंसने बोलने का अवसर नहीं मिला होगा । और जो अपने को न मिला दूसरे को कैसा मिले ? यह विचार उसके मन में आते हैं, यही कारण है कि माँ को वह राक्षसी कहती है ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा कहा जाता है कि यह समस्या नवयुवक युवतियों में अधिक दिखाई देती है । लेकिन उनके जीवन का अंत करूणाजनक हो रहा है । वे अपने मार्ग से भटक रहे हैं । साथ ही शादी शुदा लोग इस समस्या से पीड़ित भी दिखाई देते है । स्वच्छंदी जीवन के कारण युवक-युवतियाँ इकट्टा हो कर अनैतिक संबंध प्रस्तापित करके महाभयंकर बीमारी के रोगी बन रहे हैं । इसलिए इस समस्या की गंभीर चर्चा एकांकीकार ने की हैं ।

3.12 विधवा की समस्या -

मनुष्य की मृत्यु अटल है । उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका परिवार अनाथ हो जाता है । विधवा पत्नी को समाज के साथ और आर्थिक परिस्थिति के साथ कसरत करनी पड़ती है । आज विधवाओं की स्थिति प्राचीन काल में थी वैसी है । विधवा को परिस्थिति के साथ समझौता करना पड़ रहा है । वह अपमानित, पीड़ित अंधश्रद्धा के घेरे में जी रही है ।

'ऊँचा पर्वत गहरा सागर' एकांकी में विधवा समस्या आ गई है । मोहनलाल की बेटी मीरा विधवा है । जब मीरा का अकेला बेटा मर जाता है तब वह बहुत दुःखी हो जाती है । मोहनलाल उसके दुःख को

भूलाने के लिए गंगोत्री दर्शन का आयोजन करते है । मोहनलाल की मृत्यु आधे रास्ते में ही हो जाती है । तब वह अपने आपको अभागन समझने लगती है । दुःख को भूलाने के लिए वापस समाज में आना नहीं चाहती है । आनंद महाराज के साथ हिमालय में रहने का निर्णय करती है । अभागन मीरा को आखिर हिमालय में सन्यासी होना पड़ता है । जीवन के अंत तक भगवान आराधना करते- करते मर जाती है । विधवा का पूनर्विवाह होना असंभव है । मीरा जैसे अनेक विधवाओं की स्थिति ऐसी है । इसलिए एकांकीकार कहना चाहते हैं कि विधवा को समाज से मान सम्मान से अछूता रहना पड़ा है । अंत तक वह अकेले ही जीवन गुजारती है ।

'माँ' एकांकी में कमला युवावस्था में विधवा हो जाती है । माँ-बाप के घर की स्थिति देखकर मैके में रहना नहीं चाहती है । उसकी छोटी बच्ची भी है । पूरी जिंदगी किस के साथ गुजरना ? किसको अपनाना ? यह प्रश्न उनके सामने आते हैं । तब बच्ची को अनाथ आश्रम में छोड़कर गाँव से चली जाती है । और दूसरी शादी कर लेती है । लेकिन अंत में दूसरे पति की मृत्यु हो जाने के बाद वह विधवा ही रहती हैं ।

कमल के पति की मृत्यु न हो जाती तो बेटी मंजूला न अनाथ होती न माँ के प्यार से वंचित होती । एकांकीकार ने इसमें विधवा की मानसिकता का चित्रण किया है। विधवा का एक समय ऐसा आ जाता है कि उसे कोई मार्ग दिखाई नहीं देता है , तब वह गलत काम करती है ।

'कुपे' एकांकी में विधवा के खाने और रहने का प्रबंध हो जाता है लेकिन उसके शरीर की तृप्ति के लिए किस न किसी व्यक्ति का सहारा जरूरी पड़ता है । सांत्वना विधवा प्राध्यापिका है । उसके दो बच्चे हैं । रहने के लिए मकान है । उनके पास बहुत पैसा है, लेकिन पति नहीं है । तब विनोद के साथ राते गुजारती है । वह उसके साथ शादी नहीं कर सकती है , क्योंकि समाज से डरती है । बच्चों को घर में रखकर विनोद के पास जाती है । तब उसे कहती है - "मै अपनी शरीर की माँग पूरी करने आती हूँ ।"

सांत्वना के रात देर आने से बच्चों का भविष्य बिघड़ता है, माँ की ममता से वे दूर जाते है । यह भावनिक दूरी आगे चलकर महंगी पडती है । एकांकीकार ने इसके चित्रण द्वारा भावनिक और शारीरिक प्रश्न को उठा दिया है । विधवा को पति न होने के कारण गैरमार्ग अपनाना पड़ता है ।

'धनिया' एकांकीका में भोला की पहली पत्नी मर गई है । घर में औरत न होने से घर की हालत बिगड़ गई है। उसका कोई अपना नहीं है । अपना दुःख होरी को कहते समय भोला कहता है - "जिस तरह मरद के मर जाने से औरत अनाथ हो जाती है, उसी तरह औरत के मर जाने से मरद के भी हाथ-पाँव कट जाते हैं । मेरा तो घर उजड़ गया, मेहतो । कोई एक लोटा पानी भी देनेवाला नहीं ।" [50]

औरत को जो दुःख पति की मृत्यु से होता है वही दुःख पति को भी पत्नी के मृत्यु के बाद हो जाता है । लेकिन इसमें बहुत फर्क है । एकांकीकार ने यहाँ पर अलग रूप से इस समस्या की चर्चा की है ।

उपर्युक्त एकांकीका अध्ययन से कहा जाता है कि प्राचीन काल के विधवा को जिस नजर से देखा जाता था उसी तरह वर्तमान युग में भी देखा जाता है । कोई भी भला आदमी विधवा के साथ विवाह करने तैयार नहीं है । फलतः तरूण विधवा गैर मार्ग अपनाती दिखाई दे रही है । समाज में यह समस्या कम नहीं है । इसलिए विधवा के लिए सरकार द्वारा उपाय करने की जरूरत है ।

3.13 मद्यपान की समस्या -

आधुनिक जीवन में मानवीय मन अधिक भावनिक बन गया है । जीवन में अपयश आने के कारण आदमी भौतिक वस्तुओं का सहारा ले रहा है । चरस, गांजा, अफु, ब्राउन शुगर, शराब के माध्यम से आत्मसंतुष्ट हो रहा है । छोटी - छोटी बातों पर नाराज होकर इन सब चिजों का सहारा ले रहा है । इसी कारण समाज में यह समस्या बढ़ रही है ।

'लिपस्टिक की मुस्कान' एकांकी में रीता अपने पति राकेश के साथ बार - बार झगड़ा करती है । तब वह मनशांति के लिए शराब का सहारा लेती है । रात को क्लब से शराब पीकर आती है । राकेश जब डाँटता है, तब उसे छोड़ने के लिए कहती है । जब यह राकेश की हद से बाहर हो जाता है तब वह रीता को तलाक देता है । उसे पति और बच्चों से शराब के कारण दूर जाना पड़ता है ।

प्रस्तुत चित्रण द्वारा फैशन के नाम पर किए जानेवाला दुराचार को सामने लाया है । आज शहरों में पुरूषों के साथ स्त्री भी शराब पी रही है । इसी कारण समाज से नैतिकता का पतन हो रहा है । ऐसा एकांकीकार इसके चित्रण द्वारा कहना चाहते है ।

'ऊँचा पर्वत गहरा सागर' एकांकीका में अफीम, गांजा, चरस के प्रति पहाड़ी लोग जादा ही आकर्षित दिखाई देते हैं । क्योंकि वहाँ का वातावरण भी उसी तरह का है । हिमालय की चोटी पर अनेक लोग अफीम की एक गोली के लिए, जो गलत काम बताए वह करने को तैयार होते हैं । जब यात्री चेरियन, जयमा नाम के बुढ़ी औरत की बीमारी में शुश्रुषा करता है, तब वहाँ दँवा की गोली के बारे में बातें होती है । पहाड़ी दूकानदार पारसिंह कहता हैं - "गोली (हंसकर) आपका मतलब दवा की गोली से है । मै समझा बंदुक की गोली ! गोली तो सरकार, अफीम की होती है । मजा आ जाता है ... ।" [51]

पारसिंह की बातों से यह दिखाई देता है कि पहाड़ियों को नशाबाजी की जादा ही आदत है । एक गोली या शराब की बोतल के लिए गंगोत्री के चोटी पर पहुँचाने का काम करते है । प्रस्तुत एकांकी द्वारा एकांकीकार ने समाज में नशीले दँवा एवं मद्य का कितना प्रभाव है यह दिखाया है । वर्तमान जीवन के अनेक गुनाह इसी कारण हो रहे हैं । इसी तरह 'नहीं, नहीं, नहीं' एकांकी में मद्यपान की समस्या आ गई है । विनोद अपनी पत्नी नीलम की कसम खाता है । आज के बाद वह शराब नहीं पीएगा । फिर भी मित्र नरेश के घर में सिगरेट और बोतल देखकर पागल हो जाता है । और कहता है - 'एक बार जिसने इसको होठों से लगा लिया, वह फिर इसके बिना नहीं रह सकता । जिसने एक बार इसे पी लिया उसकी अब चाह मिट जाती है ।" [52]

अंत में अपनी पत्नी की कसम तोड़कर फिर पीना शुरू कर देता है । जब पत्नी उसे ढूँढ़ते उसके पास आती है । उसकी अवस्था देखकर वहाँ से चली जाती है । जो वापस नहीं आती है । विनोद को वह छोड़ देती है । विनोद जैसे अनेक युवक इस कारण बरबाद हो रहे हैं । कानून, समाज कुछ भी नहीं कर रहा है।

'मर्सीडीज ओर ढोलक' एकांकी में मद्यपान की समस्या आ गई है । श्रीमती चावला के घर सुशील और शर्मा जाते है जो लेखक कवि है । तब वह शराब पीने के लिए कहती है । श्रीमती चावला अमेरिका में रहती है । शराब पीना गैर नहीं मानती है । मिसेस थापर के पति विदेश में रहते है । लेकिन मिसेज थापर शराब नहीं पीती है । तब गुप्ता उन्हें समझाते है - ''मैं भाई साहब नहीं हूँ । यह रिश्ते - नाते बनाने का रिवाज बहुत दकियानूसी है । मै सिर्फ 'गुप्ता' हूँ, और आप केवल मिसेज थापर है । जो शीघ्र विदेश जा रही है । विदेश में शराब पीना कर्तव्य है । और आप जानती होगी कि कर्तव्य को धर्म कहते है । इसलिए आज आपको पीनी होगी । अपने पति की कल्याण कामना के लिए पीनी होगी ।'' [53]

आखिर उसे शराब जबरदस्ती पीलाते है । और एक दूसरे के गले में गले डालकर नाचना शुरू करते है । शराब पीना समाज में प्रतिष्ठित माना जाता है । उच्चवर्गीय पार्टी में जबरदस्ती शराब पीलाई जाती है । वर्तमान समाज में जो शराब नहीं पीता है । उसे उच्च वर्ग में असभ्य माना जाता है । परंतु ये सब झुठी प्रतिष्ठा के कारण हो रहा है । यह एकांकीकार बताना चाहते हैं ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा कहा जा सकता है कि इस समस्या का मूल समाज में है । समय पर ही नियंत्रीत करके आनेवाले संकट को टाल सकते है, तब कही मद्यपान की समस्या थोडी बहुत कम हो सकती है । नहीं तो भविष्य में हमारे छोटे - छोटे बच्चे शराब के बूँद के लिए एक - दूसरे को जिंदा मार देंगे । उज्वल पीढ़ी निर्माण करने के लिए इस समस्या पर कानूनी पाबंदी लगानी जरूरी है ।

3.14 भ्रष्टाचार की समस्या -

भ्रष्टाचार आज शिष्टाचार बना है । उसका विरोध करना और व्यवस्था बदलना आज कल मानव के हाथ में नहीं रहा है । जब मानवीय मन पर शुद्ध विचारों का प्रभाव पड़ेगा तब इस व्यवस्था में परिवर्तन आ सकता है ।

'कितना गहरा कितना सताई' एकांकी में युधिष्ठिर, संदीप, हेमंत, मधुकर, गुरूदीप, पद्मा, श्याम, नलिमा आदि सभी नव युवक भ्रष्टाचार का विरोध करनेवाले हैं । शहर में राजनीतिक नेताओं के आदेशानुसार वे भ्रष्टाचार के विरोधी जुलूस निकालते हैं ।

वे सभी मिलकर भ्रष्टाचारी व्यवस्था बदल नहीं सकते है । क्योंकि भ्रष्टाचार का मूल उन्हीं के सभी घरों में है । युधिष्ठिर के पिता एक बोरी सिमेंट में दो बोरी रेत मिलाकर बिकते हैं । संदीप के पिता ऊँचे पद पर रहकर ऊँची रिश्वत लेते हैं । नलिमा के पिता प्रोफेसर हैं । वे नवयुवतियों को फँसाते हैं । मधुकर के पिता रेड़िओं को जाली विज्ञापन देकर रोज हजारो रूपए कमाते हैं । संदीप कहता है "उस स्त्री की मौत का कारण मैं तो हूँ । पर यह बात कभी नहीं मानुँगा । क्यों मानु, कोई मानता है ? युधिष्ठिर के पिता एक बोरी सीमेंट में दो बोरी रेत मिलाकर तेरह के स्थान पर अठाईस को बोरी बेचते हैं । मेरे पिता जितने ऊँचे पद पर है उतनी ऊँची रिश्वत लेते हैं । क्यों वे अपने अपराध स्वीकार करेंगे ? " [54]

इस समस्या के कारण भारतीय समाज में नैतिक मुल्यों का ऱ्हास हो रहा है । जो भी इस व्यवस्था के विरूद्ध वह बोलता है । अंत में वही मार्ग अपनाता है, एकांकीकार ने इसी ओर निर्देश किया है । इसके चित्रण द्वारा वे यह कहना चाहते हैं कि भ्रष्टाचार की समस्या गंभीर है । भ्रष्टाचार का मार्ग अपनाने के लिए लोग नए - नए मार्ग निकाल रहे हैं । इसी कारण गैरकानूनी काम बढ़ रहा है ।

'साँप और सीठी' एकांकी में भ्रष्टाचार की समस्या आ गई है । शैलेंद्र और उमेश बत्रा नाम के दो व्यापारी है । वे सीमेंट के भाव बढ़ाकर बिकते है । जब वे किसी एजंसी की लाईसंस खरेदी करते है, तब पैसे देकर खरेदी करते है । इसी एकांकीका में जब अजित को इनकम टैक्स ज्यादा भरना पड़ता है । तब चपरासी 20 रूपए लेकर कहता है - " अच्छा साहब अब उनसे न मिले हमारे शर्मा बाबू से आकर मिले वे क्लर्क है, सब ठीक कर देंगे । 220 के 20 रूपये रह जायेंगे बस आपको ।" [55] एकांकीकार ने नए - नए पद्धति का चित्रण किया है । सामान्य लोग भी मिलकर मुफ्त की कमाई खा रहे हैं । ऐसे लोगों को देश के आर्थिक स्थिति से कोई मतलब नहीं हैं । सिर्फ रूपए संपत्ति के पीछे पड़े है ।

इनकम टैक्स आदमी पर लगाकर सरकार को मुनाफा हो जाएगा यह सरकार की धारणा है । लेकिन उसी कार्यालय का आदमी 20 रूपए के लिए सरकार के 200 रूपए का नुकसान करा देता है । इससे हमारी सरकारी व्यवस्था कितनी भ्रष्ट है यह दिखाई देती है ।

इसी तरह 'सीमा और रेखा' एकांकी में शरतचंद्र राज्य के मुख्यमंत्री हैं । भ्रष्टाचार के कारण जनता उनके विरूद्ध आवाज उठाती है । उनके विरूद्ध मोर्चा निकलता है । लोगों के सामने जाने के लिए वे डरते है । मोर्चे पर उनके भाई कॅप्टन विजय गोली चलाते है । दो-चार आदमी मारे जाते हैं । जनता प्रतिहल्ला करती है । उसमें उनके भाई और छोटा बेटा मारे जाते हैं । आज कल भ्रष्ट व्यवस्था के विरूद्ध आवाज को दबाने के लिए नेता लोग पुलीस यंत्रणा का उपयोग कर रहे हैं । इसी कारण भ्रष्ट व्यवस्था को अधिक बढ़ावा मिल रहा हैं ।

'अभया' एकांकी में राखाल बंदोपध्याय लकड़ी कार्यालय में काम करते है । वे दो बार सरकारी लकड़ी चूराकर बेच देते हैं । ज्यादा मुनाफा कमाते समय पकड़े जाते हैं । मुख्य कार्यालय के क्लर्क श्रीकांत बाबू उसे दया दिखाकर छोड देते हैं । जब तीसरी बार राखाल वही काम करते हैं । तब श्रीकांत बाबू से चपरासी कहता है - " श्रीकांत बाबू ! बडे साहब ने बोला है कि आपको कल प्रोम (ब्रह्मा) जाना होगा।

क्यो ?

ठीक तो मालूम नहीं पर मुझे लगता है कि आप के वे राखाल बाबू जंगली भैसे उन्होंने किसी को सींग मार दिया है ।

क्यों भाई किसको मार दिया सींग ?

ठीक तो पता नहीं पर मामला टेढ़ा है, फौजदारी करेंगे तो जेल जाना ही होगा ।'' [56]

एक बार किसी गुनाह में माफ कर देने से आदमी सुधर नहीं जाता हैं । याने राखाल बाबूने बहुत बड़ा भ्रष्टाचार कर लिया है । राखाल बाबू रिश्वत देकर अपना काम करते है । लेकिन एक दिन उन्हें जेल जाना पड़ता है ।

'प्रकाश ओर परछाई' एकांकी में सुधा के चाचा जगन्नाथ प्रसाद लोहे की मार्केट में भ्रष्टाचार करते है । सरकार का टॅक्स न भरकर अपनी तिजोरियाँ भरते हैं । जब पुलिस उन्हें गिरफ्तार करती हैं। तब वे पाँच हजार रूपए देकर छूट जाते हैं । पुलिस पाँच हजार लेकर भ्रष्टाचारी को सहीसलामत छोड देती है । यही जगन्नाथ चाचा खुद भ्रष्टाचारी होकर सुधा के प्रियकर हरिश को घर से बाहर निकालते है । उनकी शादी रूकवा देते है । वर्तमान परिस्थिति इसी तरह की है । जो ऐसे लोगों की ही मदद कर रही है । आज समाज व्यवस्था ऐसी है कि स्वयं भ्रष्टाचारी, गुन्हेगारी प्रवृत्ति के लोग दूसरों पर खिचड़ उछालते है । प्रभाकर ने समाज के अंत में पाए जानेवाली भ्रष्ट व्यवस्था पर प्रकाश डाला है । साथ ही इस व्यवस्था से समाज और सरकार का कितना नुकसान हो रहा है यह दिखाया है ।

उपर्युक्त एकांकी अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता है कि यह भी बहुत बडी समस्या है इसके कारण भारतीय अर्थ व्यवस्था कमजोर हो रही है । और अनेक प्रश्न निर्माण हो रहे है । यह समस्या पहले से ही समाज में दिखाई देती है । वर्तमान समाज में इसका अलग - अलग रूप दिखाई दे रहा है । इस व्यवस्था के कारण अनेक लोग अमीर हो रहे हैं । वे लोग गैर कानूनी काम को बढ़ावा दे रहे हैं । इसलिए इस समस्या की ओर हर एक व्यक्ति को गंभीर रूप से देखना जरूरी है ।

3.15 तलाक की समस्या -

संविधान के अनुसार दूसरी शादी करने का अधिकार सभी को दिया है । पति - पत्नी को कानून द्वारा तलाक मिलने की सुविधा है । परंतु आज कल पढ़े - लिखे स्त्री-पुरूष अन्य मार्ग अपना रहे हैं । एकांकीकार ने इस बढ़ती हुई समस्या का चित्रण निम्नलिखित एकांकियों में किया है ।

'स्वर्ग और संसार' एकांकीका में सुकांत पढ़े - लिखे, बुद्धिवादी न्यायाधिश है । लेकिन अपनी पत्नी मंजू से तलाक चाहते हैं । उसे हिमालय की बर्फीली पहाड़ी पर ले जाकर मारने की कोशिश करते हैं । जब प्रयत्न असफल होता है तो दूबारा क्षीर-गंगा के दुर्गम बर्फीले प्रदेश में छोड़ आते हैं । मदद के लिए वह सुकांत को पुकारती है तब उषा अमरसिंह और शामसिंह को भेजकर मदद करती है । मृत्यु के द्वार से वापस आती हुई सुकांत उसे क्यों मारना चाहता है, यह बताती हुऐ वह कहती है - "क्यों ? क्योंकि मै सुंदर नहीं हूँ । क्योंकि मै इतनी सभ्य नहीं हूँ कि उनके साथ चल सकूँ । क्योंकि वह आसानी से तलाक नहीं ले सकते । क्योंकि वह जज हैं ...।" [57] आधुनिक समाज तलाक लेने की नई - नई पद्धतियाँ अपना रहा हैं । कानूनी तलाक लेने से स्वयं का नुकसान हो जाएगा । इस भय के कारण सुकांत जैसे न्यायाधिश नई तरकीब द्वारा पत्नी को मारने की कोशिश करता है । पढ़े - लिखे आदमी भी तलाक को अपनाते समय कितने गिर जाते है, इसका सुंदर चित्रण एकांकीकार ने किया हैं ।

'आँचल और आँसू' एकांकीका में प्रोफेसर राकेश दूसरी पत्नी सुशीला के संतान की इच्छा पूरी नहीं कर सकते हैं । तब खुद प्रोफेसर कहते है - "सुशीला, तुम मुझे तलाक दे सकती हो ।" [58] लेकिन सुशीला तलाक दे नहीं सकती । सुशीला की सहेली सुपर्णा तलाक लेती है और कहती है - "होता क्या ? कुछ गलत कह रही हूँ । जो कुछ हम करते है, उससे छिपते क्यों है ? पुरूष यदि दूसरी, तीसरी पत्नी रखकर गर्व से सिर ऊँचा रख सकता है तो नारी क्यों नहीं दूसरा, तीसरा या छठा पति पाकर गर्वित हो सकती है ! युरोप की महिलाओं की तरह हम भी ऐसे बात करना चाहती है । जब मेरी पहले पति से शादी हुई थी तो ... और हाँ अब तो तू मुझे अपनी श्रेणी में समझ, मेरे पतिदेव ने मुझे तलाक दे दिया है । चौंकती क्यों यह कोई पाप है ? बाँझ हूँ । बाँझ को पत्नी

होने का कोई अधिकार नहीं है ।'' [59] आज कल कोई भी कारण लेकर पुरूष वर्ग स्त्री को तलाक दे रहा है । इसी कारण तलाक ग्रस्त महिलाएँ मानसिक रोग से बीमार हो रही हैं । कभी - कभी ऐसी महिलाएँ अवैध काम करती नजर आ रही हैं । प्रस्तुत चित्रण में एकांकीकार ने तलाक ग्रस्त महिला के मानसिकता का प्रभावी चित्रण किया है।

'दस बजे रात' एकांकी में सुधीर की यह दूसरी शादी है । पहली पत्नी के मृत्यु के बाद वह मानसिक बीमारी से त्रस्त है । जब भी दूसरी पत्नी निशा उसके पास जाती हैं तब वह मीनु ... मीनु खून-खून कर के बेहोश पड़ता है । निशा अपनी मन की बातें पत्र में लिखकर नाराजगी व्यक्त करती है । तब वह कहता है - ''न लिखती तो बहुत - बहुत बुरा होता । भला मुझे तुम्हारा जीवन नष्ट करने का क्या अधिकार है । किसी भी पुरूष को किसी नारी के जीवन से खिलवाड़ करने का कोई अधिकार नहीं । निशा, तुम मुझे छोड सकती हो, तुम मुझे तलाक दे सकती हो ।'' [66]

निशा अपने पति सुधीर से प्रेम चाहती है । उसकी शरीर की माँग पूरी करने में सुधीर बीमारी के कारण असफल होता है तब शादी का अंत तलाक तक आ जाता है । लेकिन यहाँ पति स्वयं की कमजोरीयाँ स्पष्ट कर के तलाक को अलग रूप प्रदान करता है ।

इसी तरह 'साँकले' एकांकीका में तलाक की समस्या है । विश्वनाथ की बेटी पुष्पा की शादी हो जाती है । जब पुष्पा के पति को यह मालूम है कि पुष्पा ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं है तब पति उसे तलाक देता है । और दूसरी शादी करता है । पुष्पा अपने नसीब को दोष देती रहती है । दुःखी पुष्पा अपने पिता का घर छोड़कर नई जिंदगी जीने के लिए शहर जाती है । पुष्पा की दूसरी शादी जीवन के अंत तक नहीं होती हैं । एकांकीकार कहना चाहते हैं कि वर्तमान समाज में पुरूष वर्ग छोटे - छोटे कारण पर तलाक ले रहा है । तलाक लेना फैशन बन गया है । यह पाश्चात्य संस्कृति का परिणाम है ।

'दरारों के द्वीप' एकांकीका में डा. सौमित्र के साथ शालिनी शादी के बाद तलाक लेने की कोशिश करती है । डा. सौमित्र चमार है । शालिनी उच्च कुलिन ब्राह्मण की बेटी है । जब डाक्टर के गाँव में

सवर्ण उनके लोगों को जलाकर मारते है । तब से चिंतित रहते है । वे शालिनी से कहते है - भाषण मत दो शालिनी । मुझे भाषण से चिड़ है । वे तथाकथित ऊँची जातिवाले, इनका धर्म है, उपदेश देना । और कर्म है इंसानों को जिंदा जलाना । इस बात पर शालिनी को बहुत दु:ख होता है।

हर समय वह डाक्टर के चिंता को दूर करने का प्रयास करती है । लेकिन नाकाम होती है । तब मार्था से कहती है - ''जितना ही जिंदगी को पकडने और बचाने की कोशिश करती हूँ, उतनी ही वह फिसलती जाती है । हर प्रयत्न के बाद लगता है, जैसे मै हवा में निरर्थक हाथ मारती रही । बर्दाश्त की सीमा होती है । मैं अब दिवालिया हो गयी हूँ । (विराम) इसलिए अब मैं कुछ नहीं सोचूँगी । बस मूक्ति दे दूँगी उसे । कुछ भी बचाने की कोशिश नहीं करूँगी । यही समाप्त हो जाएगी यह कहानी और यही नामशेष हो रहेगी वह शालिनी जिसने कभी प्यार किया था । कितना पीड़ादायक है यह मूक्ति ।'' [61]

लेकिन अंत में वह डा. सौमित्र को तलाक नहीं देती । वह अपने आप को सँभाल लेती है । कभी - कभी पति द्वारा परेशान होकर वह स्वंय तलाक देना चाहती है । वर्तमान समाज में इस तरह का चित्र अधिक दिखाई देता है । प्रस्तुत एकांकीका में शालिनी डाक्टर से तलाक नहीं लेती है । अपना विचार बदल कर उनके साथ संसार करती है ।

उपर्युक्त एकांकियों के विवेचन द्वारा यह कहा जा सकता है कि तलाक समस्या का चित्रण उनकी एकांकियों में कम मिलता है । जो चित्रण है, प्रभावी है । संविधान द्वारा अनेक पाबंदियों के कारण समाज में यह समस्या कम देखने को मिलती है । लेकिन 'स्वर्ग और संसार' एकांकी का में जज पात्र तलाक के लिए जो मार्ग अपनाता है, यह देखकर कहा जाता है कि कानूनी तौर पर तलाक लेना लोग ज्यादा पसंद नहीं करते है । अन्य मार्ग से तलाक को पसंद कर रहे है । इसी कारण स्त्री मूल्य कम हो रहा है । सिर्फ भोग वस्तु के रूप में समाज उसे देख रहा है । यह बड़ी दु:ख की बात है ।

3.16 मनोरुग्णों की समस्या -

आज कल ऊपर से शांत दिखाई देनेवाली व्यक्ति अंदर से किसी ना किसी कारण बीमार रहती हैं । ऐसी व्यक्ति किसी का भी खून कर सकती है । इसके द्वारा समाज में अनेक प्रश्न निर्माण हो रहे हैं । पुलीस और घरवाले इनसे धोखा खा रहे हैं । तनाव ग्रस्त जिंदगी के कारण मनोरूग्न की संख्या बढ़ रही हैं ।

'दरिंदा' इस एकांकी में मनोरूग्ण की समस्या आ गई है । परेश मनोरूग्न है । वह सुंदर वस्तु देखता है तब उसको नष्ट कर देता है । रजनी का सुंदर बच्चा देखकर, उसके गाल पर तमाचा मारता है । पत्नी नीला पूँछती है क्यों मारा तब कहता है - ''हाँ नीला । यह बहुत सुंदर है, बड़ा प्यारा है । मेरा जी करा कि इसे खूब मारूँ, खूब मारूँ कि....''[62] मनोरूग्न के लक्षण इसमें दिखाई देते हैं । चलती रेल की चेन खींचता है, और गार्ड से कहता है कि मन में आ गया इसीलिए खींच ली । परेश तीन सौ फिट पहाड़ से कूदने को तैयार होता है तब पत्नी नीला आ जाती है । तैरना न जानकर भी गंगा की धारा में कूद पड़ता है । सौभाग्य से नाववाले बचा लेते है । इसके बाद एक दिन वह नीला की हत्या कर देता हैं । साथ ही उसी कमरे में अपने गले की नस काटकर मर जाता है ।

प्रभाकर ने मनोरूग्नों की मानसिक अवस्था और समस्या का चित्रण बड़ी सफलता से किया है । मानसिक रोगी अपने स्वयं और दूसरों के जीवन में अनेक समस्या निर्माण कर रहे है ऐसे व्यक्ति हत्या सफाई से कर देते है और पुलिस, समाज को फँसाने में कामयाब हो जाते हैं ।

'मीना कहाँ है' एकांकीका में मनोरूग्न की समस्या आ गई है । नरेश मनोरूग्न है । मामूली कारण से वे मीना की हत्या करते है । वह मीना से बेहद प्यार करता हैं । मीना को अनाथ आश्रम से उठाकर अपनी बेटी की तरह पाला । जब मीना अपनी सहेली की तरह खिलौने की जिद करने लगती है, तब क्रोध में वह इतना मार देते है कि वह मर जाती है । मीना के मरने के बाद में उसे दफनाकर उस को किसी ने उठा लिया है, यह बहाना करते है ।

दरसल मीना के घर में इतने सारे खिलौने होते हुए भी दूसरों के पास खिलौने देखकर माँगती है । वे खिलौने कीमती हैं । नरेश इसे देखकर असहाय्य होते है कि इतने कीमती खिलौने कहाँ से लाऊ, और यह बच्ची यह भी नहीं समझती कि जिसको माँ, बाप, भाई और सब का प्यार मैं अकेला दे रहा हूँ, और एक छोटे खिलौने के लिए इतना हंगामा करती है । इसी क्रोध में आकर उसे जमीन पर पटाक देते है और वह मर जाती है ।

मीना के हत्या के बाद वह उसी जगह जाकर अपने किए गए पाप पर पश्चाताप करता है, रोता है लेकिन मीना वापस नहीं आती । नरेश के क्रोध को पहचानकर सतीश हत्या का पता लगा लेता है ।

एकांकीकार ने नरेश के द्वारा समाज में सामान्य देखने वाले व्यक्ति किस तरह रूग्न होते है, और क्रोध में क्या करत है, यह दिखाने का प्रयास किया है । साथ ही यह कहा जा सकता है कि नरेश मीना से छुटकारा पाना चाहता था । गुनाह करने के बाद स्पष्ट कह देता है कि मैने हत्या की है ।

'दस बजे रात' एकांकी में सुधीर मनोरूग्न है । वह मीनू से बेहद प्यार करता है । वह भी उससे प्रेम करती है । दोनों घूमने रेल से चलते समय रेल के डिब्बे में स्फोट होता है । तब मीनू के पाँव कट जाते है । बेहोशी से सुध में आकर निशा को सुधीर देखता तो वह असहाय्य निशा को देखकर क्रोधित होता है । मन में कहता है कि इतनी सुंदर मीनू अब इस दुनिया में अपाहिज बनकर रहेगी । नहीं यह मुझे पसंद नहीं है । तभी वह घायल मीनू की हत्या कर देता है ।

लेकिन हत्या के बाद वह एक दिन भी शांति से सो नहीं पाता है । किए गए पाप के कारण उसे रात के दस बजे दौरे पडने लगते हैं । पत्नी निशा उसके मन को समझाकर हत्या का पता लगाती है । सुधीर प्राध्यापक है । वह मानसिक रोग के कारण कुकृत्य करता है । हत्या का पता लगने तक मीनु रेल दुर्घटना में मरी थी ऐसा वह कहता रहता है लेकिन एक दिन सच बोलना पड़ता है । जब भोजन के समय पत्नी निशा के सामने पागलपन का दौरा पडता है तब वह कहता है- " (तेजी से) दस बज गए ! भाग जाओ ! ... मैं कहता हूँ भाग जाओ .... नहीं तो मैं तुम्हारा खून कर दूँगा ... तुम सुंदरी हो, मैं तुम्हारा खून कर दूँगा ।"[63] इस चित्रण द्वारा एकांकीकार ने रूग्न का स्वभाव बताया है । वे कहते हैं - यह लोग अंत तक सत्य क्या बताते नहीं है । इसलिए

इनके मन में क्या हो रहा है । इसका अंदाज करना मुश्किल हो जाता है । भविष्य में ऐसी व्यक्ति से सावधान रहना चाहिए ।

'भोगा हुआ यथार्थ' एकांकी में पारसनाथ भी मनोरूग्न है । किए गए क्रुर हत्या से वह रात को सो नहीं पाता है। दिन में सब खिड़कियाँ, दरवाजे बंद करके पागलों की तरह बड़बड़ करता रहता है ।

इसी पागलपन में वह अपनी पत्नी कुंती को प्रयाग में छोड़ आता है । कुंती वापस जिंदा आ जाती है । तब उसे पागल करके कुए में धकेल देता ह् । अपनी बेटी के खाने में जहर मिला देता है । अपने भाई निरंजन को पागल बनाकर उसकी हत्या कर देता है । एक के बाद एक हत्या करते - करते वह अपने आप को बड़ा मालिक समझने लगता है । वह स्वयं भी इस स्थिति में आत्महत्या करता है । आज कल मानव की स्वार्थी भावना भौतिक वस्तु की लालसा संपत्ति का लालच इसी कारण मनुष्य में ये बीमारी फैल रही हैं ।

'बीमार' एकांकी में रामरतन शहाबाद के थानेदार है । स्वतंत्रता आंदोलन में जनता पर भयंकर अत्याचार करता हैं । जब वह दरोगा बनता है तब थाने पर राष्ट्रीय पताका फहराने वालों पर गोलियाँ चलाकर स्त्री-पुरूष-बच्चों को मार देता है । इसी घटना से वह रोगी बनता है । वह शोर नहीं शांति चाहता है । वह डाक्टर से कहता है - " तो ... तो क्या मैं इसी प्रकार तडपता रहूंगा । नहीं , नहीं डाक्टर साहब, मैं हाथ जोडता हूँ । मुझे इस नरक से निकाल ले । मुझे शांति से मरने दो । मुझे इन्जेक्शन न लगाओ । मुझे दवा न दो ... ।" [64]

दुर्भाग्य से ऐसे व्यक्ति अपने घर में रहते हुए भी इनका रोग सामने नहीं आता है । अतः तक पता भी नहीं चलता की इस व्यक्ति के मन में क्या हो रहा है । हत्या का सिलसिला चलता है अतं में वे खुद उसे स्वीकार करते है ।

'क्या वह दोशी था ?' एकांकी में मनोरूग्न की समस्या आ गई है । किशोर मनोरूग्न है । पत्नी से बेहद प्यार करता है । लेकिन उसकी लंबी बीमारी के कारण उसका मन उब जाता है । परिणाम स्वरूप दवा देकर उसका अंत कर देता है । किशोर की यह घातक भूल अकारण नहीं थी। उसका बीमार मन ऐसा करना

चाहता था । किशोर यह पाप मन की उन्मुक्त अवस्था में व्यक्त होता है । और उसका मस्तिष्क गलती और भय की तीव्रता के कारण विकृत हो जाता है । एकांकीकार ने समाज के हर एक पैलु से देखते हुए मानवीय प्रवृत्ति का भी अच्छा चित्रण किया है ।

'जज का फैसला' एकांकी में विमला और प्रकाश नव विवाहित है । प्रकाश विमला से बेहद प्रेम करता है । विमला भी अति सुंदर है । उसके नील नयन, तिल के फुल से नासापुट, गुलाब - सा खिला मुखडा, किंचित भूरे सघन केश यह देखकर प्रकाश की भूख मिट जाती है । लेकिन जब रेल दुर्घटना में विमला का एक पैर, एक आँख और मुँह टेढ़ा हो जाता है तब उसे देखकर वह पागल हो जाता है । एक समय नर्स के बिना पुछे विमल के पास जाकर उसका गला घोट देता है । तब वह डाक्टर से कहता है - "(हाँफता सा) अब ठीक है, तुम्हारी वेदना खत्म हो गई , तुम्हारी सुंदरता अमर हो गई ! (कुछ शांत होकर) डाक्टर ! अब मै कही भी चलने को तैयार हूँ, कही भी ।" [65] सुंदर पत्नी का बिघड़ा चेहरा देखकर, उसे मुक्ति दिलाने की इच्छा प्रकाश में पहले से थी । इसलिए वह पत्नी का खून कर देता है । जज इस जुर्म में प्रकाश को फाँसी दे देते है । तब स्वयं प्रकाश कबूल करता है । वह उसे प्रेम नहीं करता था । सिर्फ दिखावा था । इसी कारण डाक्टर भी फँस जाते है । प्रकाश गैरकृत्य करने में कामयाब हो जाता है । इस चित्रण द्वारा कहा जा सकता है कि भावनिक बनने से मनुष्य पागलों की तरह हरकत करता है ।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा कहा जा सकता है कि मनोरूग्न की समस्या समाज में अदृश्य स्वरूप में दिखाई देती है । इसी कारण समाज में अनेक खौफनाक गुनाह हो रहे है । लेकिन अंत तक यही रूग्न समाज के सामने नहीं आते है । इसको देखने के अलग दृष्टि अपनानी पड़ती है । एकांकीकार ने इस अदृश्य समस्या का गंभीर स्वरूप दृष्टिगोचर कर दिया है ।

3.17 कुवाँरी माता की समस्या -

वर्तमान समाज में छोटी उम्र के लड़कियों को प्यार में फँसाकर उनके साथ छल किया जा रहा है । ऐसे समय पेट में बच्चा रहने के कारण अनेक युवतियाँ माता बन रही है । घर की आर्थिक स्थिति, गरीबी,

प्रेम में छल आदि के कारण यह समस्या बढ़ रही है । एकांकीकार ने इसके चित्रण द्वारा कई उपाय भी बता दिए हैं ।

'कूपे' एकांकी में कुमारी माता की समस्या आ गई है । सांत्वना रेल से सफर कर रही है । उसकी मुलाखात जुड़िथ नामक अमेरिकन युवती से होती है । उसके पास छोटी बच्ची है । उसे देखकर सांत्वना बाते करती है । बातो-बातों में जुड़िथ से यह पूँछती है कि इसके पिता कौन है ? तब जुड़िथ कहती है - " मेरी शादी नहीं हुई है । (हँसती है) लेकिन इसके पिता बहुत सुंदर है । ऊपर की मंजिल में ही तो ठहरे है । उनसे ही इस लंबी यात्रा में मैने यह सुंदर बच्ची प्राप्त की है ।" [66]

जुड़िथ जैसी अनेक युवतियाँ क्षणिक सुख में आकर अनेक बच्चें निर्माण करती है । जिसका कोई भविष्य नहीं होता है । ऐसी माता का भविष्य क्या हो सकता है, जो विवाह के बंधन पूर्व बच्चे निर्माण करके अपने भविष्य के सामने अनेक प्रश्न निर्माण कर देती है । इसके चित्रण द्वारा एकांकीकार कहना चाहते हैं कि - भावनिक संयम रखना जरूरी है ।

'दरारों के द्वीप' एकांकी में मार्था डा. सौमित्र के यहाँ नर्स का काम करती है । सौमित्र की पत्नी शालिनी को अपनी कर्म कहानी बताती है । मार्था आदिवासी नारी है । वह उच्चवर्ग के सुंदर स्वस्थ लेखक से प्रेम करती थी । लेखक ने नए - नए स्वप्न दिखाकर मार्था का उपयोग किया । जब उसके पेट में बच्चा होने की संभावना हो गई तब पवित्र प्रेम के बदले में घृणा देकर उसे भगा दिया । तब मार्था कुमारी माता बन जाती है । लेकिन उसके बच्चे को वह मार देती है । वह शालिनी से कहती है - "(आवेश) उस विश्वासघाती के बच्चे की माँ बनती मैं, एक ओर विश्वासघाती को जन्म देने के लिए ? कभी नहीं ... ।" [67]

लेकिन इतना कहने पर भी वह शादी नहीं करती है । उसके साथ कोई भी शादी करने को तैयार नहीं है । अपना दुःख भूलाने के लिए, वह प्रभू येशु से प्रार्थना और मरीजों की सेवा करती हैं । मार्था का दुःख सभी कुमारी माता का दुःख है । फिर भी इस समस्या का अंत नहीं हो रहा है । आज बीसवी सदी में अनेक मार्था के साथ इस तरह का बर्ताव हो रहा है ।

उपर्युक्त एकांकियों के विवेचन द्वारा कहा जा सकता है कि इस समस्या द्वारा समाज में अनाथ बच्चे पैदा हो रहे है जिसका कोई भविष्य नहीं । ऐसे बच्चे अवैध धंदा बढ़ाने में बॉस लोगों को मदद कर रहे है । परिणाम स्वरूप समाज में अनेक गुनाहों को बढ़ावा मिल रहा है ।

निष्कर्ष -

1. उच्च - नीचता संविधान द्वारा बदल नहीं जाती है । मानुष्य की मूल प्रवृत्ति ही बदलनी चाहीए तब जातीयता कम होने में मदद हो सकती है । ग्रामीण शहरी स्कूल कॉलेज में विज्ञान विषय में जिस तरह चिकित्सा होती है । उसी तरह धर्म शिक्षा का प्रबंध होना चाहीए, तब जाति को देखने की दृष्टि नई पीढ़ी में बदल जाएगी । एकांकीकार ने चमार जाति की समस्या का अधिक चित्रिण किया है । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इनकी ओर एकांकीकार अधिक लक्ष है परंतु भारतीय समाज में विविध जातियाँ हैं । जिसके अनेक प्रश्न उपस्थित करने की जरूरत है ।

2. काम समस्या के पीछे मानवी स्वच्छंदी भावना है । साथ ही यह समस्या कम करने के लिए फैशन के नाम पर किए जानेवाला खुला देह प्रदर्शन, रंगीले फिल्मों, पर पाबंदी लगानी चाहीए । साथ स्कूल कॉलेज से ही लैंगिक विषयों पर चर्चा होनी चाहीए जिसे इसके प्रति देखने का दृष्टिकोण बदल जाएगा ।

3. प्रेम समस्या के पीछे स्वार्थ, आशिक्षा, परिवार धर्म, जात, वंश और व्यक्ति का वैयक्तिक दृष्टिकोण इन कारणों द्वारा यह समस्या अधिक बड़ रही है । मानव उपर्युक्त कारणों को बदल दे तो यह समस्या कम हो सकती है ।

4. परिवार नियोजन करने के लिए भारतीय समाज की मानसिक स्थिति में सुधार करना चाहीए । समाज में रूढ़ि, परंपरा, अंधश्रद्धा का निर्मुलन आवश्यक है । तब आबादी पर काबू पा सकते है । प्रभाकरजी ने परिवार नियोजन की समस्या का चित्रण मर्यादापूर्ण एकांकियों में किया है फिर वह प्रभावी और विचार करने के लिए उस्फुर्त है ।

5. अनाथों की समस्या भारतीय समाज में अधिक दिखाई देती है । अनाथों के दु:ख को समझकर उनके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहीए । साथ ही सरकार द्वारा आश्रम में अन्य सुविधा के साथ उनके लिए रोजी रोटी का भी बंदोबस्त करना चाहिए ।

6. अनमेल विवाह से अनेक प्रश्न जीवन में कटुता पैदा कर रहे है । इस तरह की समस्या निम्न वर्ग में दिखाई दे रही है । इसका कारण है कि दहेज, रूपए और चीज वस्तुओं की माँगे पूरी करने में यह वर्ग असमर्थ है ।

परंतु इससे भी भयानक दृश्य आज उच्च वर्ग में दिखाई दे रहा है । फैशन के रूप में आज इस तरह के विवाह हो रहे है । इसके पीछे स्वार्थ, रूपयों का लालच दिखाई दे रहा है । परिणाम स्वरूप पाश्चात्य देश की तरह तलाक की पद्धति अधिक बढ़ रही है ।

7. अवैध संतान का प्रश्न समाज के सामने बहुत कठिन है । शादी के पहले अवैध संबंध से संतान निर्माण हो रहे है । अंत इस तरह के बच्चों का न पिता होता है, न माँ का ठिकाना । ऐसे बच्चों के साथ आदरपूर्वक व्यवहार करना चाहीए । तब आगे यह बालक सक्षम नागरिक बन सकते है ।

8. फैशन समाज में प्राचीन काल से दिखाई देती है, परंतु फैशन का रूप अब बदल चुका है । पाश्चात्य देशों का अनुकरण हम कर रहे है । हर काम में फैशन आ गई है, इस समस्या ने नीति मूल्य को कुँचल दिया है । फैशन द्वारा शरीर सुंदर बनाया जाता है, आत्मा नहीं ।

9. पाश्चात्य देशों का अनुकरण, शहरीपण, इस कारण स्वच्छंद जीवन की समस्या बढ रही है । युवक - युवतियाँ माँ - बाप से अलग रहना चाहते है परिणाम स्वरूप ममता, प्रेम, कम हो रहा है । बच्चों में अविश्वास पैदा हो रहा है अकेले मन की शांति का मार्ग खोजते, ब्राउन शुगर, चरस का सहारा ले रहे है और अपने दोस्तों को भी लेकर मार्ग से पथभ्रष्ट हो रहे है । अकेले भटकनेवाले अनेक युवक - युवतियों के लैंगिक संबंध से महाभयंकर बीमारी फैल रही है ।

10. प्राचीन काल में विधवा प्रति देखने का जो दृष्टिकोण था उसमें परिवर्तन नहीं आया है । कोई भी समाज विधवा को खुले आम स्वीकार करने में असमर्थ दिखाई देता है । परंतु वही समाज उस विधवा के साथ छुपे शारीरिक संबंध रखते पीछे नहीं है । जन जागरण द्वारा समाज परिवर्तन करने का प्रयास पढ़े -लिखे आदमी द्वारा करना चाहीए ।

11. मद्यपान की समस्या भारतीय समाज में बढ़ती जा रही है । इसका कारण है रूपए संपत्ति लालच । नव युवकों में कम समय में ज्यादा दाम पाने के प्रयत्न में असफलता, तणावग्रस्त जीवन, सफलता में अविश्वास के कारण मद्यपान करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है ।

12. भ्रष्टाचार भारतीय समाज में ज्यादा है, इसका विरोध करनेवाले लोग इस समस्या को समाज से नष्ट करने में असफल रहे है । आज भ्रष्ट व्यवस्था और अधिकारियों का ही स्वराज्य है । इस विरूद्ध घर से ही अभियान शुरू करना चाहिए ।

13. कानूनी रूप से तलाक लेना, लोग कम पसंद करते है । वे अन्य मार्ग अपना रहे है ।। साथ ही अन्य पारिवारिक कारण है, जैसे दहेज, गरीबी, असुंदरता, कम शिक्षा और समाज में प्रचलित रूढ़ियाँ आदि अनेक कारणों द्वारा तलाक समस्या बढ़ रही है ।

14. मनोरूग्न एक बीमारी है । इसके द्वारा समाज को खतरा हैं । ये बीमारी ऊपर दिखाई नहीं देती है । इसलिए मनुष्य को सतर्क रहना चाहिए ।

15. प्रेम में छल के कारण कुँवारी माता का प्रमाण बढ़ रहा है ।

संदर्भ

1. सं. रघुवंश मोतीलाल बनारसीदास, लोक वृत्तानुकरण, नाट्य शास्त्र, पृ. 108 से 109
2. सं. डा. धीरेंद्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश, प्रथम भाग 1, पृ. 373
3. राम आहुजा, सामाजिक समस्या, पृ. 1
4. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, दरारों के द्वीप, पृ. 328
5. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, रात चाँद और कहर, पृ. 204
6. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, सुनंदा, पृ. 183
7. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, समन्दर, पृ. 418 से 419
8. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, ऊंचा पर्व गहरा सागर, पृ. 312
9. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, संस्कार और भावना, पृ. 405
10. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 3, कुम्हार की बेटी, पृ. 46
11. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, वही, पृ. 53
12. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 3, दरारों के द्वीप, पृ. 326
13. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, नियति, पृ. 156
14. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, सॉप और सीठी, पृ. 180
15. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, रक्तचंदन, पृ. 300
16. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, कापुरूष, पृ. 372
17. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, समन्दर, पृ. 419
18. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, टुटते परिवेश, पृ. 32
19. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, कुपे, पृ. 236
20. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, कुपे, पृ. 240
21. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, लिपस्टिक की मुस्कान, पृ. 266
22. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग -3, मर्सीडीज और ढोलक, पृ. 99

23. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 3, अर्द्धनारीश्वर, पृ. 12

24. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 3, अर्द्धनारीश्वर, पृ. 12

25. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 3, सूली पर टँगा खेतकमल, पृ. 186

26. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 3, सूली पर टँगा खेतकमल, पृ. 191

27. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, साँकले, पृ. 268

28. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, पूर्णाहुति, पृ. 277

29. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, प्रकाश और परछाई, पृ. 354

30. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 3, सूली पर टँगा खेतकमल, पृ. 192

31. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, टुटते परिवेश, पृ. 35

32. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, रसोई घर में प्रजातंत्र, पृ. 89

33. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, आँचल और आँसु, पृ. 340

34. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, आँचल और आँसु, पृ. 336

35. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, दूर और पास, पृ. 368 से 369

36. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, माँ, पृ.338 से 339

37. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, आँचल और आँसु, पृ. 334

38. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, आँचल और आँसु, पृ. 335 से 336

39. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, आँचल और आँसु, पृ. 336

40. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, डरे हुए लोग, पृ. 124

41. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, लिपस्टिक की मुस्कान, पृ. 265

42. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, वही, पृ. 265

43. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग -3, मर्सीडीज और ढोलक, पृ. 64

44. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, साँकले, पृ. 256

45. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, साँकले, पृ. 256

46. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, लिपस्टिक की मुस्कान, पृ. 276

47. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, कापुरूष, पृ. 364

48. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, कुपे, पृ. 235

49. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, टुटते परिवेश, पृ. 28

50. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 3, धनिया, पृ. 121

51. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, ऊंचा पर्व गहरा सागर, पृ. 311

52. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, नहीं, नहीं, नहीं, पृ. 87

53. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग -3, मर्सीडीज और ढोलक, पृ. 96

54. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग -1, कितना गहरा कितना सताई, पृ. 17

55. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, सॉप और सीठी, पृ. 75

56. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 1, अभया, पृ. 56

57. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, स्वर्ग और संसार, पृ. 395

58. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, आँचल और आँसू, पृ. 336

59. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, आँचल और आँसू, पृ. 340

60. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, दस बजे रात, पृ. 430

61. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 3, दरारों के द्वीप, पृ. 343

62. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 3, दरिन्दा, पृ. 67

63. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, दस बजे रात, पृ. 427

64. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 3, बीमार, पृ. 234 से 235

65. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 3, जज का फैसला, पृ. 87

66. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 2, कूपे, पृ. 234

67. विष्णु प्रभाकर संपूर्ण नाटक, भाग - 3, दरारों के द्वीप, पृ. 338